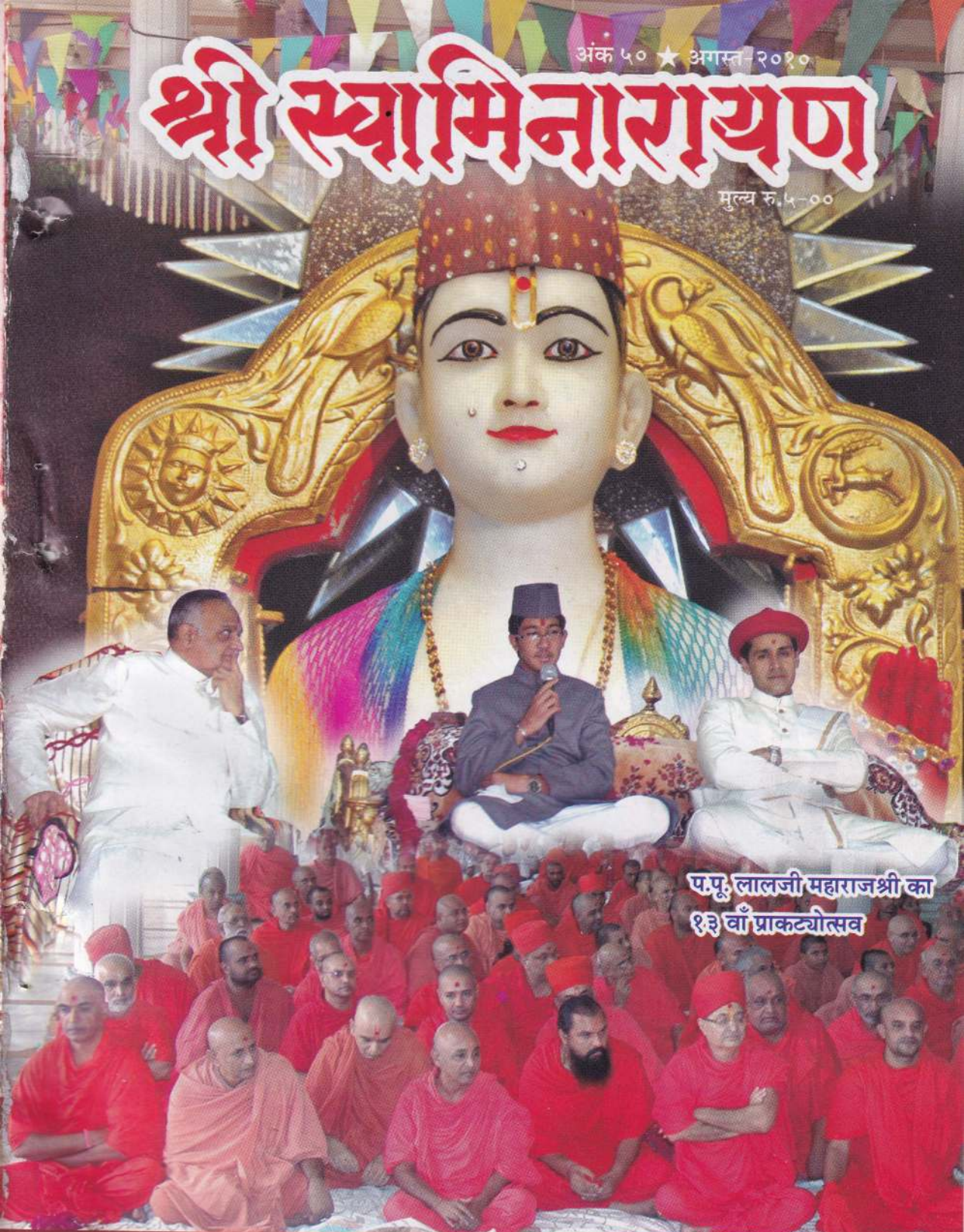
अंक ५० ★ अगस्त-२०१०

श्री स्वामिनारायण

मुल्य रु.५-००



प.पू. लालजी महाराजश्री का
१३ वाँ प्राकट्योत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१



(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव समक्ष भव्य झूलोत्सव दर्शन

(२) गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री

(३) गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में पू. ध्यानी स्वामी धर्मवंशी गुरु का माहात्म्य समझाते हुए

(४) श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में भव्य नूतन वी.आई.पी. गेस्ट हाउस की शिलान्यास विधि प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ निश्रा में प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न हुई। साथ में महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, कोठारी दिगंबर भगत तथा प.भ. रतिभाई पटेल (ट्रस्टीश्री)

(५) उवारसद मंदिर के प्रसादी के दरवाजे को श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिए प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण करते हुए हरिभक्त



श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ | अंक : ४० | अगस्त-२०१०

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम्	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	३
३.	श्री नरनारायणदेव माहात्म्य	४
४.	अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के १३ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर	५
५.	मांस न खावत	६
६.	ॐ श्री ज्ञानिने नमः	८
७.	श्री ठाकुरजी की सेवा-रीति में उपयोगी महत्व की वात	९
८.	धर्मकुलवंशी आचार्य के नाम से पूर्व धर्मधुरंधर परम पूज्य १००८ श्री क्यों लगता है	११
९.	आनंद की लहर	१२
१०.	सत्संग सुरभि	१३
११.	सत्संग बालवाटिका	१५
१२.	भक्ति सुधा	१६
१३.	सद्गुसंग समाचार	१९

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम

समग्र देश में वर्षाऋतु का मौसम चल रहा है। किसान अपने खेत में फसल बोने का काम कर दिये हैं। अपना देश ८०% खेती पर आधारित है। इसलिये वर्षात होने से फसल अच्छी होती है। फसल अच्छी होने से सामान्य व्यक्ति का जीवन भी व्यवस्थित चलने लगता है। भगवान जीवन दिये हैं तो पेट के लिये उद्यम करना ही पड़ेगा। गृहस्थों को जीवन व्यवहार चलाने के लिये कितना कष्ट सहना पड़ता है। मनुष्य जन्म से लेकर अन्तिम क्षण तक पुरुषार्थ करता ही रहता है। तृष्णा का कोई अन्त नहीं। छोटे तबके के व्यक्ति के लिये आज के परिवेश में छोटा मकान बनाना कठिन सा हो गया है। बड़ा फ्लेट, आलीशान सुख साधन सुसज्ज बंगला टु व्हीलर से लेकर फोर व्हीलर गाड़ी, ए.सी. उच्च पद प्राप्त करने में सम्पूर्ण जिन्दगी बीत जाती है। फिर भी संतोष नहीं आता। बल्कि तृष्णा की अधिकता के कारण बाह्य जगत में भटकते हुये चौराशी लाख की योनियों में भटकने का समय आजाता है। यह सब हम जानते हैं फिर भी उसी में फंसे हुये हैं, यही ईश्वरीय बिडम्बना है। इसलिये समझदार को चाहिये कि खूब सावधान होकर जीवात्मा का कल्याण करने के लिये सतत प्रयत्नशील रहें। तभी चौराशी लाख योनि में भटकना नहीं होगा। हम कितने भाग्यशाली है ? इस अद्‌भुत अलौकिक संप्रदाय में भगवान ने जन्म दिया है। ऐसे साक्षात सर्वोपरि श्रीहरि भगवान स्वामिनारायण तथा उनके द्वारा स्थापित देव, आचार्य, संत, सत्‌शास्त्र ये सभी हमें बड़ी सरलता से मिला है। फिर भी हम सावधान नहीं रहेंगे तो ..... ?

जगत के अन्य मनुष्यों को भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, मोक्ष या कल्याण इत्यादि की कोई खबर नहीं, सायद वे इन सुंदर शब्दों को कभी सुने भी नहीं, इसलिये उनके जैसे हम नहीं है। हमें सबसे दुर्लभ में दुर्लभ सत्संग मिला है। इसलिये जितना भी हो सके भगवान की भजन-भक्ति कर लेनी चाहिये। इस जीव के कल्याण हेतु करना है। दिखाने के लिये नहीं करना है। इसका सदा ख्याल रखना चाहिये। इस समय अपने सभी मंदिरो में भगवान को झूले पर झुलाने का समय चल रहा है। जिस पर प्रभु का झूलते हुये सभी को दिव्य दर्शन का लाभ मिलेगा। चातुर्मास में ऐसा अद्‌भुत दर्शन तथा इन महीनो में विशेष कथा का लाभ आप सभी ले सकें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१०)



१. इटादरा गाँव में श्री गोरधनभाई पटेल तथा माणसा गाँव में श्री ईश्वरभाई पटेल के यहाँ पदार्पण।

४. श्री दीपकभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा।

श्री दशरथभाई नायक के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, चांदलोडिया।

६. श्री हेमलभाई रावजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, नवावाडज।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर खोखरा महेमदावाद पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा, श्री कांतिलाल पटेल (दलाल) द्वारा आयोजित पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

श्री कनुभाई सोनी के सुवर्ण सृष्टि ज्वेलर्स के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, नवरंगपुरा।

२३. श्री माधवलाल सोमदास पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, न्यु राणीप।

२५. गुरु पूर्णिमा प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में संत हरिभक्तों द्वारा गुरु पूजन।

२६. संत महा दीक्षा विधिअपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

२८. कडी गाँव में श्री अंबालाल डाह्याभाई पटेल के यहाँ पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा में हिंडोला प्रसंग पर पदार्पण।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० • शृंगार आरती ८-०५

• राजभोग आरती १०-१० • संध्या आरती १९-३० • शयन आरती २०-३०

श्री नरनारायणदेव माहात्म्य

- शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (अहमदावाद)



क्रमशः

हे भक्तों ! अहमदाबाद में विराजमान श्री नरनारायणदेव ने ही बद्रिकाश्रम में तप करके भरतखंड के भक्तों को सुखी करते हैं । इस जगत का सर्जन भी श्री नरनारयणदेव ने ही किया है । जगत के बीज रुप जल का भी इन्होंने ही सर्जन किया है । जल का सर्जन करके विशाल जल राशि महा समुद्र में शेष नाग के उपर सो गये । इस तरह जग का आश्रय करने से भगवान को शेषशायी नारायण कहा गया । इनकी सेवा में साक्षात् लक्ष्मीजी रहती है । यह घटना आदिकाल की है इसीलिये भगवान को आदिनारायण भी कहा जाता है ।

भक्तों ! श्रीजी महाराज की आज्ञा से जिन्होंने शास्त्रों की रचना की है ऐसे शतानंद स्वामी द्वारा रचित ग्रंथ में श्रीजी महाराज के चरित्र का वर्णन किया गया है । वह ग्रन्थ है सत्संगिजीवन, जिस में नरनारायण का सुन्दर अर्थ किया गया है ।

भगवान जब चार स्वरुप में धर्म तथा मूर्ति देवी से प्रगट हुये तब ब्रह्माजी उनका एकनाम सभी का कल्याण करने वाले "नारायण" ऐसा रखा । जिसका अर्थ शतानंद स्वामी ने इस तरह किया है - नार अर्थात् नर का समूह, अयन अर्थात् जिससे मोक्ष मिले - उसे नारायण कहते हैं । इसके साथ ही जगत का कल्याण करने के लिये तप करने नर के साथ नारायण बद्रिकाश्रम में रहते हैं, इससे भी नरनारायण नाम सार्थक है । दूसरे पुत्र जो तीनो काल मे माया काल इत्यादि से जो आसक्त न हों सभी से परे ऐसे पुत्र का नाम ब्रह्माजी ने नर रखा । बड़े-बड़े राजाओं को वश में करेंगे इसलिये नर नाम सार्थक होगा । दूसरे पुत्र का नाम हरि तथा कृष्ण रखा गया ।

भक्तों ! इस प्रकार भगवान नरनारायण की महिमा शास्त्रों में वर्णित है । परंतु नरनारायण भगवान एक स्वतंत्र अवतार है । यह पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण का अवतार है । इसमें दो राय नहीं है । स्वामिनारायण भगवान अपने मुख से प्रमाणित किये हैं -

श्री पुरुषोत्तम नारायण ते प्रथम धर्मदेव थकी मूर्ति ने विषे श्री नरनारायणरुपे प्रगट थईने बदरिकाश्रम ने विषे तप करे छे। अने बडी ते नरनारायण ते पृथ्वी ने विषे कोईना कार्यने अर्थे मत्स्य, कच्छ, वाराह, वामन, रामकृष्णादिक जे देह तेने ग्रहण करीने नट नी पेठे त्याग करे छे । अने ते श्री नरनारायण सर्वे अवतार ना कारण छे ।(अमदावाद-४)

इस तरह पुरुषोत्तम नारायण नरनारायण के रुप में प्रगट हुये । इसीलिये नरनारायणदेव उन्हीं के अवतार हुये । साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण तो स्वामिनारायण भगवान के रुप में प्रगट हुये । श्री नरनारायण के स्वरुप को अपना स्वरुप बताया है । इसलिये श्री नरनारायणदेव को अपना स्वरुप मानकर मैने प्रतिष्ठित किया है । इनमें तथा श्री नरनारायणदेव में थोड़ा भी भेद नहीं है । ब्रह्मधाम के निवासी भी वे ही हैं ।

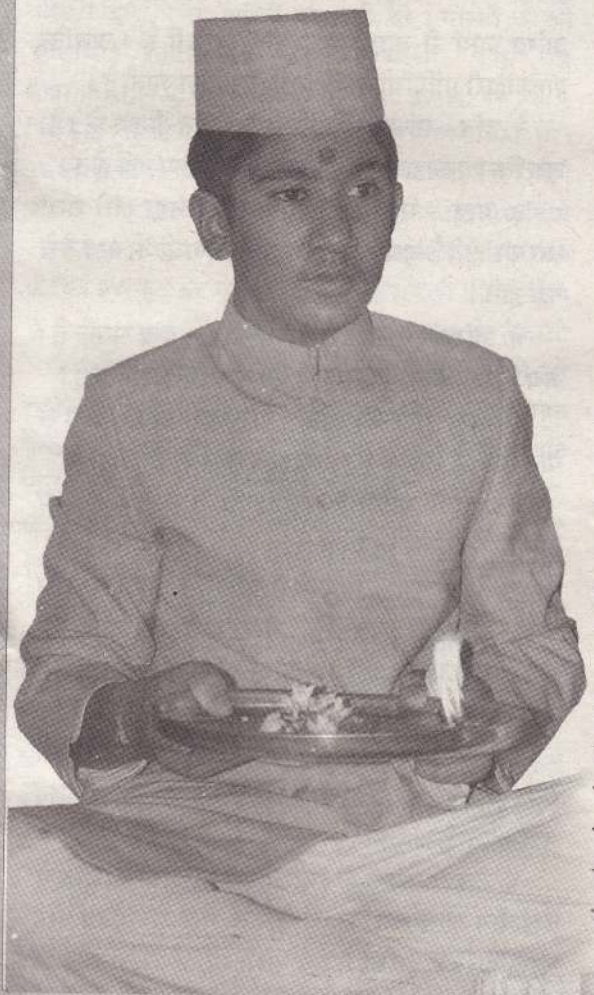
इसलिये श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का स्वरुप होने से गौड़ मानना अयोग्य कहा जायेगा । इतना ही नहीं श्रीहरिने वचनामृतमें अपने इष्टदेव श्री नरनारायणदेव हैं ऐसा कहकर उनकी महिमा को बढाया है । जब भी वात करते तो श्री नरनारायणदेव को अपना स्वरुप कहकर महत्व को बढाते थे । भक्तों ! ऐसे भगवान अन्यत्र कहाँ मिलेंगे । इसलिये जीव का कल्याण करने के लिये श्रीजी महाराजने श्री नरनारायण की प्रतिष्ठा करके भक्तों के लिये मोक्ष का मार्ग खोल दिया है । यह समझकर भक्तों को चाहिये कि वे आत्मसमर्पण भाव से आत्म कल्याण साध्य करले अन्यथा समय वीत जाने पर पछताना ही हाथ में आयेगा ।

इसलिये भगवान श्री नरनारायणदेव का स्मरण, भजन-भक्ति करने से जीव को शांति मिलेगी । भक्तों ! हमें इसका खूब अनुभव हुआ है आप भी दर्शन करके शांति का अनुभव कर सकते हैं । ऐसी मेरी चाहना है ।

अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के १३ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर

आषाढ कृष्ण-१० मीं का दिन अपने संप्रदाय में बड़ा महत्व का है। इस पुण्यकारक दिन में ही प.पू. लालजी महाराजश्री भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज का प्रागट्योत्सव का दिन है।

स्वभाव छे स्वामीनो पर दुःख हारी रे,
वारी बहुनामीनो कोई ने दुःखीयो रे,
देखी न खमाय दया आणी रे।



अपने बाल स्वरुप श्री लालजी महाराज खूब दयालु है। वे जब कभी किसी दीन-दुखिया को देखते हैं तो द्रवित हो जाते हैं। उसके दुःख - दारिद्रय को दूर करने का रास्ता भी बताते हैं। भोजन या अन्य वस्तु देकर उसके दुःख को दूर करते हैं। एक समय उनके धर्मप्रवास में रोड़ ऊपर एक बालक को चाकलेट बेचते हुये देखते हैं, तुरतं गाडी रोकवाकर सभी चाकलेट खरीद लेते हैं, उसकी इस तरह से मदद करते हैं। इससे बालक खुश हो जाता है। बालक को मनोमन आश्चर्य हुआ कि जिस चाकलेट को बेचने मे पांच-छ दिन लगता वह मात्र एक क्षण में बिक गया।

अपने प.पू. लालजी महाराजश्री की अमिय दृष्टि मात्र मनुष्यो पर ही नहीं होती बल्कि पशु-पक्षी-वृक्ष पर भी वैसी ही भावना रहती है।

बगीचे में से जूही, बेला, गुलाब, मालती, मौलश्री, गेंदा इत्यादि के पुष्प पार्षदो के साथ चुनकर लाते हैं और श्री नरनारायणदेव तथा रंगमहल एवं अक्षर भवन के घनश्याम महाराज के लिए सुंदर माला बनाते हैं। इस माला को सायंकाल पार्षदो के साथ बनाते है और प्रातः श्रृंगार आरती में प्रभु को धारण कराया जाता है। यह एक अद्‌भुत कार्य हैं तथा सभी के लिये प्रेरणा रुप है।

प.पू. लालजी महाराज प्रातः उठकर पूजा पाठ करके बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की तरह अपने बाल मित्रों के साथ खेलते हैं और भक्तों को दर्शन का सुख देते हैं।

ठन्ढी के समय श्री स्वामिनारायण बाग में शाकोत्सव मनाया जाता है। जिस तरह श्रीहरि भोजन सामग्री तैयार करके अपने मित्रों को खिलाते थे ठीक उसी तरह लालजी महाराज भी अपने हाथों तैयार करके सभी को खिलाते हैं। भोजन बनाते समय की शोभा का क्या वर्णन करना ? उस दृश्य को देखकर प.पू. बड़े महाराजश्री अपने कैमरे में उतार लेते हैं।

(अनुसंधान नं. १० पर)

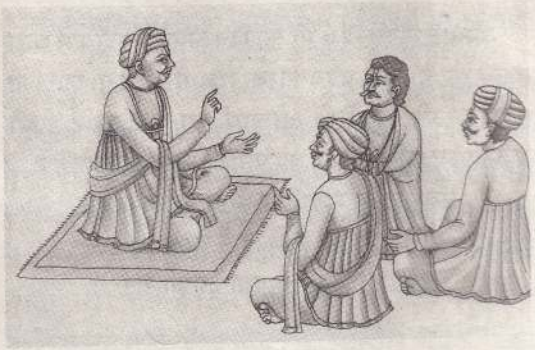
मांस न खावत

- शा. अभयप्रकाशदासजी गुरु
स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

स.गु. प्रेमानंद स्वामी तीसरा नियम "मांस न खावत" इसको समझा रहे हैं। प्राय: यह नियम सभी शास्त्रो में मिलता है। चाहे हिन्दु हो, मुस्लिम हो या ईसाई या ख्रिस्ती हो। सभी के शास्त्रों में मांस निषेधकी बात की गयी है। भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के १५ वे श्लोक में लिखा है कि न भक्ष्यं सर्वथा मासं यज्ञशिष्टमपिक्वचित्" मांस यज्ञ से बचा हुआ हो तो भी आपत्तिकाल में भी नहीं खाना चाहिये। भगवान स्वामिनारायण के समय में यागादिक कार्यो में पशुओं को मारकर होम किया जाता था। जो हवन से मांस बच जाती उसे सभी लोग प्रसाद के रुप में ग्रहण करते थे। यदि कोई मना करे तो उससे कहा जाता है कि मांस प्रसाद है इसलिये उसका अनादर नहीं करना चाहिये। पाप लगता है। आज के समय में मांस तथा मदिरा को कई स्थानो पर चढा कर प्रसाद के रुप में खाते-पीते रहते हैं। इस में भगवान के भक्त भ्रष्ट न हो, इसलिये महाराज ने आज्ञा की है। इसके अलांवा ३१२ वें श्लोक में कहें है कि औषधके रुप में भी मांस-मदिरा का सेवन नही करना चाहिये।

इस सृष्टि में दो प्रकार के प्राणी रहते हैं। एक शाकाहारी दूसरा मांसाहारी। शाकाहारी प्राणियों में गाय भैंस, बकरा, घोडा, हाथी, ऊंट इत्यादि। मांसाहारी प्राणियो में वाघ, सिंह, चिंता, वरु इत्यादि। इन प्राणियों में जो शाकाहारी प्राणी हैं वे शाक का आहार करते हैं। जो मांसाहारी प्राणी होते हैं वे मांस ही खाते हैं। लेकिन मनुष्य ऐसा प्राणी है कि जो शाकाहार तथा मांसाहार दोनो करता है। इसको देखकर वैज्ञानिकों के मन में प्रश्न खडा हुआ कि मनुष्य शाकाहारी प्राणी है या मांसाहारी ? वैज्ञानिक इसका संशोधन किये और दोनो में भेद देखा। जिसमें बाह्य स्थिति में जो अनुभव हुआ वह इस प्रकार है -

१. जन्म के समय आंख - मांसाहारी प्राणियों की



आंख जन्म से कुछ समय बाद खुलती है। जबकि शाकाहारी प्राणियों की आंख तुरंत खुल जाती है।

२. दांत - मांसाहारी प्राणियों के दांत तीक्ष्ण होते हैं। जब कि शाकाहारी प्राणियों के दांत तीक्ष्ण नहीं होते।

३. नख - मांसाहारी प्राणियों के नख लंबे तथा धारदार होते हैं जबकि शाकाहारी प्राणियों के नख वैसे नहीं होते।

४. आंख - मांसाहारी प्राणी रात्रि में देख सकते हैं। जब कि शाकाहारी प्राणियों को कम दिखाई देता है।

५. पानी-पीने की रीति - मांसाहारी प्राणी जीभ से पानी पीते हैं। जब कि शाकाहारी मुख से पीते हैं।

यह दोनों प्राणियो का बाह्य अन्तर है। अब आन्तरिक अन्तर देखते हैं।

१. आमाशय - मांसाहारी प्राणियों का आमाशय छोटा होता है, जब कि शाकाहारी प्राणियों का आमाशय लम्बाई की अपेक्षा ३-४ गुना अधिक होता है।

२. किडनी-लीवर - मांसाहारी प्राणियों की किडनी तथा लीवर खूब मोटा होता है। शाकाहारी का छोटा होता है।

४. टाइलीन पदार्थ - मांसाहारी प्राणियों के मुख में टाईलीन नाम का पदार्थ झरता नहीं है। जब कि शाकाहारी में झरता है। ये सभी अन्तर वैज्ञानिको से

प्रमाणित कहे जा सकते है। शाकाहारी प्राणियों की रचना मनुष्य से मिलती जुलती है। इसलिये मनुष्य शाकाहारी कहा जाता है। इस वात को प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. वोर्लीन ने भी अपनी पुस्तक में लिखा है।

मांसाहारी मनुष्य को हार्टअटेक, आमाशय का केन्सर किडनी का रोग - अधिक मात्रा में होता है। इसका कारण यह है कि मांसाहार करने से रक्त में चरबी की मात्रा बढ जाती है। जिस तरह पाइप में कचड़ा आने से पानी का बहाव कम होता है, इसी तरह चरबी के कारण रक्त बाहिनी में कचड़ा जम जाता है। जिसे कोलोस्ट्रोल कहते हैं। जिस कारण हृदय तक सरलता से रक्त पहुँच नही पाता। इसीलिये हार्टअटेक आता है।

दूसरा - आमाशय का केंसर मनुष्य के अन्दर कुल २६ आमाशय होता है। इसलिये भोजन पचने की प्रक्रिया।

१.८ घंटे में होती है। मांसाहारी प्राणी का आमाशय छोटा होने से जल्दी पचता है और आमाशय से बाहर भी निकल जाता है। जब कि शाकाहारी मांस भक्षण करते हैं तो पचने में भारी होता है। लम्बे समय तक अन्दर पड़ा रहता है। इसीलिये अमाशय का केन्सर होता है। तीसरा किडनी शाकाहारी प्राणी की किडनी छोटी होती है। तो भी मनुष्य मांस खाता है, जिससे किडनी पर भार पड़ता है। हानिकारक तत्व तथा युरिक एसीड को समाप्त करने का काम किडनी करती है। अधिक दबाव पड़ने के कारण थोड़े समय के बाद किडनी कमजोर हो जाती है।

दूसरे लोग यह भी कहते है कि मांस तथा अन्डा में अधिक केलेरी होती है इस लोभ से लोग खाते हैं। लेकिन जितनी केलेरी शाकाहार में है उतनी मांस में नहीं है। १०० मोमफली में ४५० केलेरी मिलती है। दाल में ३३० माखन तथा पनीर में ३५० केलेरी होती है।

प्रोटीन चाहिये तो १०० ग्रा. अन्डा में १३२ प्रतिशत प्रोटीन तथा मछली में से २२ प्रतिशत प्रोटीन के सामने मूग, उर्दी तथा पनीर में से ४४ प्रतिशत प्रोटीन प्राप्त कर सकते हैं। चना, अरहर, मटर मे से २२ प्रतिशत तथा मोमफली में ३१ प्रतिशत, सोयाबीन में ४३% प्रोटीन मिलता है। इस तरह मांसाहारी की अपेक्षा शाकाहारी श्रेष्ठ।

अब तो वैज्ञानिक भी मांसाहार का विरोधकरते हैं - स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि -

मांस खाई पशु मनुष्यनुं थाय नर नारी प्रसन्न।
तेह जाय जमपुरीये पड़े रक्षोगण भोजन ॥
मर्या नर पशु अवतरी, त्यां राक्षस ना गण थाय।
जेम खाधुं तुं मांस तेहनुं, तेम तेनुं तेमज खाय ॥

जो नरनारी मांस खाते है, वे राक्षसगळ नामक नरक में जाते हैं। जो मनुष्य पशु की मांस खाता है उस मनुष्य का मांस उसी तरह दूसरे जन्म में वह पशु उसकी मांस खाता है। इस तरह ध्यान रखकर कभी भी किसी पशु प्राणी का मांस नही खाना चाहिये।

अपने आगामी उत्सव

श्रावण शुक्ल-१५ ता. २४-८-२०१० मंगलवार को मुकुटोत्सव पूनम, रक्षाबंधन, नारीयल पूनम।

श्रावण कृष्ण-२ ता. २६-८-२०१० गुरुवार को श्रीहरि बालमुकुन्द को झूले से सायंकाल ५-०० बजे उतारना।

श्रावण कृष्ण-५ ता. ३०-८-२०१० सोमवार जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव।

श्रावण कृष्ण-८ ता. २-९-२०१० गुरुवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी उपवास, मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में उत्सव।

भाद्र शुक्ल-११ ता. १९-९-२०१० रविवार जलझीलणी एकादशी, श्री गणपतिजी की पालकी - अहमदाबाद, मूली, जेतलपुर, भुज, वडताल तथा गढपुर मंदिर।

ॐ श्री ज्ञानिने नमः

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी
- जमीयतपुरा (महंत माणसा)

ज्ञान अर्थात् जानना । जानकर उसका मूल्यांकन करना। प्रत्येक वात का सार निकालना विवेक कहा जाता है । जगत के व्यवहार को समझना चाहिये । व्यवहार में फायदा न हो तो क्या फायदा ? कुछ करने के बाद जो बचे तभी उसकी होशियारी कही जायेगी । लेकिन वात करने से सफलता नहीं मिलती । पुरुषार्थ आवश्यक है ।

"करे वातो ने फाड़े ब्रह्मांड रे,
तोय टाड़े नहीं यमदंड रे ।"

खाली हाथ आकर खाली हाथ जाना हो तो आने की आवश्यकता क्या ? पाप धोकर पुण्य की गठरी बांधना आवश्यक है । समाज में संत कृपा तथा हरिभजन रुपी पाथेय बांधते जाना चाहिये । इसप्रकार की समझ को ज्ञान कहते हैं । वकील बड़े चालाक होते है, डॉ. भी बड़े कुशल होते हैं । लेकिन यह सभी ज्ञान आत्मशांति के काम नहीं आता । यह ज्ञान मात्र रुपये कमाने के लिये योग्य कहा जा सकता है । नाथ भक्त तथा सगराम वाघरी जैसी भक्ति आवश्यक है । पीठवडी के भगो-भूलो दोनो भाई बड़े भोले थे । ये सभी भगवान स्वामिनारायण के आश्रित होते ही उनकी माला के दाने बन गये । जब कि इन सभी को सत्संग का तथा भाषा का कोई ज्ञान नहीं था । भरवाड के बेटे को दूधके सिवाय और क्या ज्ञान होता है ? यद्यपि दूधके तत्व को नहीं जानता फिर भी शुद्ध दूधपीजाता है । भगवान को जानने वाले तो बहुत है । भगवान की इच्छा को जानकर उसमें भी भक्तों की चरणरज को माथे पर चढाने वाले ऐसे उद्धवजी का दूसरा कोई जोड़ा नहीं हो सकता । महाराज के स्वभाव को पिघला देने वाला स्वभाव मात्र दादा खाचर को था । अपने सगे भाईयों के सामने युद्ध के लिये तैयार अर्जुन भगवान कृष्ण की आज्ञा का पालन किये ।

मरजी जाणी महाराजनी त्यारे भारत कर्यो भरपूर इसी तरह जो सम्पूर्ण सर्वस्व त्याग करके प्रभु में आत्म समर्पित होजाता है । उसे जगत में कोई पदार्थ बाधित नहीं कर



सकता । ऐसी शरणागति को ज्ञान कहते हैं । इसीलिये छे तेतो ब्रहम स्वरुपे वर्ते छे अने भगवान नो महिमा पण यथार्थ पणे जाणे छे । माटे एने भगवान ना स्वरुप विना बीजु मन मां कांई कामना रहती नथी ।

इस जगत में जो भी व्यवहार दिखाई देता है वह कठपुतली की तरह है । महाराज के सामने तो एक ब्रह्मा के रुष्ट होने पर तेरह ब्रह्मा लाईन में खड़े रहने को तैयार करने में युग वीत जाता है । महाराज कहते थे कि स्वभाव के साथ जो शत्रुता का व्यवहार रखता है वही विजय प्राप्त करता है । भगवान कृष्ण ने गीता में भक्तों को अपनी आत्मा कहे हैं ।

भगवान स्वामिनारायण के ज्ञान की बात बड़ी अलौकिक है । वनविचरण के समय संत महंत प्रश्न पूछते बड़ी सरलता से महाराज उत्तर देते । जब महाराज प्रश्न पूछते तब सभी नाराज हो जाते थे ।

वडताल में महाराजकी सभा में वेदांताचार्य पंडित आये हुये थे । महाराज विद्वान समझकर स्वागत किये । और कहे कि आप से एक प्रश्न पूछे ? वेदान्ताचार्यने कहा

(अनुसंधान नं. १० पर)

श्री ठाकुरजी की सेवा-रीति में उपयोगी महत्व की वात

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

भगवान या भगवान के अवतार जब मनुष्य देह धारण करके पृथ्वी पर विचरण करते हैं, उस समय उनकी सेवा-पूजा की जो व्यवस्था है वही व्यवस्था मूर्ति के लिये आवश्यक है। ठाकुरजी की मूर्ति में परमात्मा प्रत्यक्ष रुप से विराजमान रहते हैं। सेवा पूजा करने वाले भक्तजन हों या कोई साधु पुरुष हों वे उस मूर्ति को प्रत्यक्ष समझ कर ही सेवा पूजा किया करें। इसमें भी मूल स्वामिनारायण संप्रदाय में श्रीहरि के वचन से तो मूर्ति में मैं प्रत्यक्ष रुप से विराजमान हूँ। स्वामिनारायण भगवान द्वारा प्रतिष्ठित कृष्ण स्वरुप हो या शि.प. श्लोक नं. ६२ के अनुसार धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा प्रतिष्ठित अन्य कोई मूर्ति हो उन सभी का श्रीहरि के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्धहोने से सेवा-पूजा के योग्य हैं।

धर्मवंशी आचार्यश्री अपने धर्म गुरु हैं। इतना ही नहीं श्रीहरि के स्थान पर बैठकर उन्हीं की आज्ञा में धर्मधुरा को सम्हाले हुये हैं। उनका ठाकुरजी के साथ साक्षात् सम्बन्ध है। इसलिये वे ठाकुरजी के विषय में जितना जानते हैं हमें भी जानना चाहिये। परंतु महाराजश्री की आज्ञा में रहकर ठाकुरजी की सेवा करनी चाहिये। प.पू. बड़े महाराजश्री का संकल्प तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर द्वारा ठाकुरजी की सेवा रीति की एक सुंदर पुस्तिका प्रकाशित हुई है। जो सभी त्यागी-गृही के लिये उपयोगी है। यह पुस्तिका अहमदाबाद मंदिर के साहित्य केन्द्र पर प्राप्त हो सकती है। यह पुस्तिका प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर द्वारा अहमदाबाद मंदिर के बड़े मंदिरो में प्रेषित की गयी है। फिर भी अहमदाबाद, वडताल दोनो देश के छोटे बड़े मंदिरों में तथा व्यक्तिगत भी यह पुस्तक उपयोगी होने से अपने पास रखी जा सकती है। कुछ अंश पुस्तक का यहां प्रस्तुत है।

ठाकुरजी जब इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे थे उस समय उन्हें कोई कृत्रिम फूल का हार नहीं पहनाया। लेकिन आज गांवो के प्रायः सभी मंदिरों में ठाकुरजी को कृत्रिम हार पहनाया जाता है। सच्ची सेवा तो यह है कि कभी भी ठाकुरजी को प्लास्टिक का या कागज से बने फूल को नहीं पहनाना चाहिये। ताजाफूल न मिल सके तो नहीं पहनाना चाहिये। कई बार ऐसा होता है कि इलायची-बादाम इत्यादि के माला में प्लास्टिक को गूंथ दिया जाता है। ऐसे माला में चिकने पदार्थ का उपयोग किया जाता है। जो अशुद्ध होता है। जिसका स्पर्श करने पर स्नान करना चाहिये। तो ऐसी माला भगवान को कैसे अर्पित कर सकते हैं। प्राकृत्तिक पुष्प सुगंधित होता है। कृत्रिम पुष्प क्या सुगंधफैला सकता है?

शास्त्रों में गणपति को भी कृष्ण का अवतार माने हैं। इसके अलांवा हनुमानजी की महिमा सारी दुनियां जानती है। इसलिये हनुमानजी तथा गणपतिजी को भी कृत्रिम पुष्पहार नहीं चढाना चाहिये। ठाकुरजी को पेन्ट, शर्ट, बेल्ट, ड्रेस इत्यादि कृत्रिम वस्तु नहीं अर्पण करनी चाहिये। चमड़े की कोई वस्तु भगवान को अर्पण नहीं करनी चाहिये। महाराज जब वर्णिवेश में हो तो उनके मस्तक पर कृत्रिम पगड़ी नहीं लगानी चाहिये। कृत्रिम जटा धारण नहीं कराना चाहिये। इस तरह करने से ठाकुरजी की मर्यादा भंग होती है। इसके साथ ही अपवित्रता का दर्शन होता है। इसी तरह माताजी को भी कृत्रिम बाल या आधुनिक उपकरण से सुशोभित नहीं करना चाहिये। राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी ठाकुरजी की विभूति कही जाती है।

ठाकुरजी को इत्र का प्रयोग भी शुद्ध करना चाहिये। आज कल तो ऐसा कृत्रिम सुगन्धित द्रव्य निकल गया है कि उसकी कोई सीमा ही नहीं है। ऐसे द्रव्य से सावधान रहना चाहिये। ठाकुरजी को जगत के जितने भी कृत्रिम पदार्थ है उसे अर्पण करने में दोष के सिवाय कोई फायदा नहीं है। ऋतु के अनुसार जैसा फल-फूल उत्पन्न हो उसी से अलंकृत करना चाहिये तथा अर्पण करना चाहिये। चन्दन चर्चित शरीर करने के लिये शरीर पर पहले पतला सूती कपड़ा पहनाये बाद में उसी कपड़े पर चन्दन का लेप

करें । केमिकल्स युक्त पदार्थ का उपयोग करने से मूर्ति खंडित होने की संभावना रहती है। इसलिये चंदन में केसर एवं कपूर का उपयोग करना चाहिये । पक्का चंदन विशेषत: मैसूर में मिलता है । वही पवित्र होता है । शुद्ध चन्दन ठाकुरजी को शीतलता प्रदान करता है । कच्चा चन्दन भी शीतलता नहीं दे सकता, कारण यह कि उसमें पर्याप्त ठन्ढक नहीं रहती ।

हरिमंदिर में विशेषरुप से गाँवो के मंदिरों में गृहस्थ पुजारी जब भगवान की सेवा करने आते हैं तभी वे नहा-धोकर पवित्र होकर आते हैं, लेकिन आभ्यंतर शुद्धि नहीं करते । नौकरी-धंधा या खेत में से आकर विना नहाये धोये ही ठाकुरजी का स्पर्श करता है तो अपराधहोता है । सत्संगी के घर में ठाकुरजी का पूजा स्थल उनकी श्रद्धा-भक्तिभाव के अनुरुप होता है । सिंहासन भक्त की उपासना का प्रतिबिम्ब है । सिंहासन में ठाकुरजी को देवों की सभा में बैठे हो ऐसा स्वरुप नहीं देना चाहिये । प.पू. बड़े महाराजश्री की हरि भक्तो को आज्ञा है कि सायंकाल नियम चेष्टा करने के बाद ही महाराज को शयन कराना चाहिये । नियम चेष्टा बोलने का समय न होतो, नियम-चेष्टा का कैसेट लगाकर अन्य काम करते हुये सुनना चाहिये । जिससे भाव उसी में रहे ।

अंत में कहना यह है कि ठाकुरजी की सेवा-श्रीहरि की इच्छानुसार श्रीहरि की आज्ञानुसार, उनकी रुचि के अनुसार तथा गुरु की आज्ञानुसार करनी चाहिये । धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहकर

पेज नं. ८ से आगे

ॐ श्री ज्ञानिने नम:

एक नहीं अनेकों प्रश्न पूछ सकते हैं । महाराजने एक प्रश्न पूछा, जिसका योग्य उत्तर नहीं था । भरी सभा में थोड़ा विचलित हो उठा ।

पूछे छे प्रश्न अल्प कांई ।
तेमां पंडित रहे छे मुंझाई ॥

परंतु श्रीहरि उनकी इज्जत रखने के लिये प्रसंशा करके वस्त्र दक्षिणा देकर संमान के साथ विदा किये । बन विचरण से लेकर वचनामृत तक भगवान स्वामिनारायण के सत्य ज्ञान का अद्‌भुत दर्शन होता है । इसलिये स.गु. शतानंद स्वामीने जनमंगल नामावली में १०८ नाम के भीतर एक नाम "ॐ श्री ज्ञानिने नम:" लिखा है ।

अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के १३ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर

पेज नं. ५ से आगे

शाकोत्सव की तरह मूर्ति प्रतिष्ठा का भी उत्सव करते हैं । जिसमें उनके मित्र रेती तथा पत्थर के सहयोग से बनाते हैं और पू. लालजी महाराजश्री उसकी प्रतिष्ठा करते हैं । यज्ञ करके पूर्णाहुति भी करते हैं ।

पू. लालजी महाराज भी वर्षो से देश-विदेश में सत्संग सभा का आयोजन करते हैं । जिस में अपना मार्गदर्शन देकर आशीर्वाद भी देते हैं । इससे उनके आध्यात्मिक तथा वैश्विक विचार की प्रतीति होती है ।

इसीलिये तो पुरुषोत्तम प्रकाश में स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि -

मारे सह धर्मकुल मानजो, सहु करजो एनी सेवा,
अन्य जण जेवा ए नहीं, ए छे जाणजो मोटा देव ॥

इसीलिये हम सभी सत्संगी अपने भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री को श्रीहरि का अपर स्वरुप समझें । उन्हीं का यह १३ वाँ प्रागट्योत्सव दिन मनाया जा रहा है, इसलिये भक्ति भाव पूर्वक पूजन-अर्चन करके उनके चरणों में शीश नवाकर कोटि-कोटि वंदन करें ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, लंडन

धर्मकुलवंशी आचार्य के नाम से पूर्व धर्मधुरंधर परम पूज्य १००८ श्री क्यों लगता है

- विनोद पी. पटेल (वहेलालवाला-अहमदाबाद)

इस संप्रदाय के सभी सुज्ञ इसका रहस्य समझें यह आवश्यक है। श्रीहरि के सभी आश्रित नर नारियों को उद्धव संप्रदाय की रीति-परंपरा जानना चाहिये, रामानंद स्वामी स्वयं उद्धव थे। वे स्वयं श्रीरंगक्षेत्र में स्वप्न में साक्षात् श्री रामानुजाचार्य से वैष्णवी दीक्षा लिये थे। इसलिये गुरु रामानुजाचार्य के शिष्य रामानंद स्वामी हुये। इस तरह संप्रदाय का मूल सिद्धान्त रामानुजाचार्य का स्वीकार करके स.गु. रामानंद स्वामीने उद्धव संप्रदाय का प्रवर्तन किया। बाद में सर्व प्रथम रामानंद स्वामी से धर्म देव का मिलन प्रयागराज में हुआ। उस समय उन्होंने धर्मदेव को शरणागत मुमुक्षुओं को मंत्र देने का अधिकार प्रदान किया। निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है-

आम मारो मनोरथ सर्वे सारो रे, कहुं वचन ते हृदये धारो रे।
तम विना धर्मधुरा जेह रे, बीजा थकी नव उपड़े रे ॥

इसलिये संत-ब्रह्मचारी सभी की रक्षा करने का उत्तरदायित्व आचार्य महाराजश्री पर छोड़ा तथा आश्रितों को आज्ञा की कि वे आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहेंगे। इस तरह आज्ञापूर्वक शिक्षा देकर श्रीहरिने अपने भतीजों पर संप्रदाय की धर्मधुरा सौंप दिया। सम्प्रदाय की धर्मधुरा स्वीकार करके आचार्य महाराजश्रीने हरिभक्त समुदाय को धर्म नियम, ध्यान, उपासना, भक्ति इत्यादि को दृढ करने का रहस्य स्वयं श्रीहरिने संवत १८८२ कार्तिक शुक्ल-१२ के दिन समझा कर तथा उत्तर-दक्षिण भाग के दोनो आचार्यों की स्थापना करके देश विभाग कर दिया। इस तरह धर्मधुरा धर्मकुल के आचार्य को समर्पित करके संप्रदाय का उत्तरदायित्व उन्हीं के ऊपर सौंप दिया। इस तरह पुरुषोत्तम नारायण अपने हाथों से नियुक्त करके अपना सहयोग देते रहे। परिणाम स्वरुप संप्रदाय के आचार्यों की परंपरा दृढ बनती गयी है। गढड़ा मध्य के १६ वें प्रकरण में बताया कि "स्वयं भगवान तो धर्मधुरंधर हैं इसलिये उनके अपर स्वरुप आचार्यश्री धर्म की रक्षा में सतत प्रयत्नशील रहते हैं। इन्हीं कई कारणों से आचार्य के नाम से पूर्व धर्मधुरंधर लिखा जाता है।"

दूसरा विशेषण परम पूज्य है, वह इसलिये कि गढडा प्रथम के ७२ वें वचनामृत में तथा वडताल के ११ वें वचनामृत के अनुसार हमेशा भगवान, भगवान के भक्त, ब्राह्मण, गरीब इन सभी का कभी द्रोह नहीं करना, इस विषय में सदा जागृत रहना चाहिये। अज्ञान में भी इनका द्रोह हो जाय तो अवश्य नाश समझना चाहिये।

इस तरह देखा जाय तो श्रीहरि अपनी इच्छा से द्विजकुल, सरयूपारीण ब्राह्मण, सावार्णि गोत्र, तीनं प्रवरों से युक्त, ऐसे कुल में जन्म लिया। इतना ही नहीं स्वयं अति नम्र, सरल स्वभाव वाले थे। ऐसे व्यक्तित्व वाले ही पूजनीय हो सकते है।

इस तरह उपर के चारों में से किसी का जान-अनजान में द्रोह न हो इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। स्वयं श्रीहरि इसका ख्याल रखते थे। इसी तरह का ख्याल महाराज के अपर स्वरुप भी रखते हैं। उपरोक्त चारो गुणों से भरपूर जीवन होने से धर्मकुल वंशीय आचार्य महाराजश्री प्रथम से लेकर आजतक सभी पूज्य नहीं बल्कि पूजनीय है। इस तरह १००८ श्री की उपाधिके लिये शास्त्रों में १००८ का अंक श्री (लक्ष्मी) का परिचायक है। १००८ बार श्री जी न लिखकर अंक से उनकी परिकल्पना की जाती है, जिससे उनकी शोभा में अभिवृद्धि होती है। इसीलिये अनंत विभूषित (श्री) शब्द अंको से अलंकृत होकर शोभा बढाता है। इसलिये भगवान के आश्रित भक्तजन इस रहस्य को समझें -

"धर्मधुरंधर परम पूजनीय १००८" आचार्य महाराजश्री के नाम से पूर्व यह लिखा जाता है। सन्मान पूर्वक लिखा जाने वाला यह अंक परंपरा से चला आ रहा है। आनेवाले समय में भी यह परंपरा चलती रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं है।

आनंद की लहर

श्रीजी महाराज गढड़ा की सभा में बिराजमान थे । वहाँ नजदीक के गाँव के हरिभक्त दर्शन करने आये । दर्शन कर सर्भा लोग सभा में बैठे । "सुखी हो न ?" ऐसा महाराज ने पूछा तब सत्संगी बोले, हे दयालु ! आपकी दया से सुखपूर्वक भजन कर रहे है । सत्संग कर रहे है किन्तु गरम मिजाजी इन्सान परेशान करते हैं । वे लोग हमारे खेत में गाय भैंस घुसा कर सारी फसल बर्बाद कर देते है ये उद्धत मनुष्यो के नाम जेठा और मेरामण है ।

भक्त वत्सल भगवान ने सोचा कि भक्त के लिए तुरंत कार्य करना चाहिये । तो आज ही उन दोनो को सबक सिखाने मांउवाधार चलते हैं । प्रभु ने बैलगाडी जोतवाई और नाजा भक्त को साथ लिये । महाराजने नाजाभक्त को कहा आप हमारे बैलगाडी के पीछे आइये । गाँव के कच्चे रास्ते और घोर अंधेरा था । इसलिये नाजा जोगिया दूसरे रास्ते चले गये और महाराज आगे चले गये ।

मांउवाधार करीब आया । पीछे के गाडी की आवाज बंद होगयी । बिलकुल सूनापन था । महारानजे सोचा, कहाँ गया । दिखाई नहीं दे रहा है महाराजने उसके नामकी आवाज लगाई । जंगल के वृक्षो के साथ आवाज टकराकर वापस आयी । एकदम सूनापन, घोर अंधेरा कहीं से उत्तर नहीं आया । महाराज को चिंता हुई इसलिए कहा जरा देख लेना चाहिये । बैलगाडी चलाने वाले भक्त ने थोडा दूर जाकर आवाज लगाई । तब दूर से आवाज आयी आप कहाँ पहुँचे ? मांडवधार इस तरफ है । आवाज की दिशा में नाजा भक्त बढे । महाराज ने कहा आप इस विस्तार के जानकार है फिर भी रास्ता भटक गये ! रास्ता भूल गये क्या ?

नाजा भक्त बोले महाराज ! रास्ता नहीं भूला पर बात कुछ गोपनीय है । महाराजने पूछा क्या गोपनीय है ? तब नाजा बोला "महाराज ! ऐसा है कि मुझे रात को दिखाई नहीं देता है । महाराजने कहा पहले बताना चाहिए न ! तो साथ में नहीं लाते । नाजाने कहा पहले कहता तो सभा में बदनामी होती सबको पता चल जाता की मैं रात में देख नहीं पाता" श्रीहरिने कहा, "अब क्या इज्जत रहेगी । हम कल सभा में कह देंगे की नाजा को रतौंधी है । आप तो लुंबा जैसे है ।"

महाराजने कहानी सुनाई

– शा. हरिजीवन स्वामी (हिंमतनगर महंतश्री)

सुनिए, एक लुंबा था उसे भी रात को नहीं दिखाई देता था । यह वात उसने किसी को नहीं बतायी थी । इसलिए धामधूम से विवाह हो गया । एक बार लुंबा को ससुराल खाने के लिये बुलाया गया । आंगन में खटिया पर बैठाया । भोजन तैयार करके सासुजी ने अंदर से बुलाया जमाई राजा भोजन के लिए आइये ? लुंबा आंगनकी दिवार पकड़ कर चलने लगा सासुजीने पूछा क्या कर रहे हो ? मुझे ऐसे कमरे बनवाने है इसलिए माप ले रहा हूँ, सुनकर सासुजी खुश हो गई मेरी बेटी को नये मकान में रहने को मिलेगा । इस प्रकार एक बार इज्जत बच गई ।

आँगन के कोने में जमाई को भोजन के लिए बैठाया । नजदीक में बीआई हुई भैंस का पडवा बांधा था । थाली में मिठाई, पुडी, सब्जी रख कर थाली दी । तब वह थाली पडवा खाने लगा । लुंबा को दिख नहीं रहा था थाली परोस दी गयी है । सासुजी दूसरी बार परोसने आयी यह देख कर सासुने कहा, अरे जमाई ! पड़वा खा रहा है और आप उसे हांक भी नहीं रहे है ? मेरे सास के पडवे को कैसे हांक सकता हूँ ? आपके घर के पशु भी मेरे लिए आदरपात्र है । खाने दीजिए उसे । दूसरीबार इज्जत बची । सासने बोला इतने भी दयालु मत बने लीजिये लकड़ी और उसे हांक दो । तभी चलने की आवाज सुनाईदी, लुंबा ने लकड़ी उठाई और सास के शिर पर मार दी । उसे लगा की पडवा आया ।

सासु के सिर पर लगने पर बोली लुंबा, लगी जोरो से लगी ! लुंबा डर गया कि सासुजी आग लगी ! हा.... हा..... जोरो से लगी । मुझे रात को नहीं दिखता ! मुझे बाहर निकालो? इस प्रकार ससुराल में उसकी इज्जत गई ये कहानी सुनकर महाराज बोले आपकी भी इज्ज नहीं बचेगी ? जो तकलीफ हो वह कह दो । फिर महाराज ने गाड़ी में बैठाकर मेरामण के घर मांडवधार गये । दोनो को गाँव से निकाल कर भक्तो का कष्ट दूर किया । भगवान कैसा आनंद करवाते है ।

सत्संग सुरभि

पण अमे तो जीवने नथी भूलता

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (न्युजर्सी-अमेरिका)

मेघपुर गाँव में श्रीजी महाराज छ महीने तक ब्रह्मभोज किये । इस कार्यक्रम में बहुत सारे लोग एकत्रित होते थे । महाराज के साथ काठी दरबार भी रहते थे । मेघपुर की इस व्यवस्था में हाटी के मालिया का एक भाराडी चोर मूलजी भी अपने मित्रों के साथ वहाँ आया हुआ था ।

मूलीजी के मन में हुआ कि काठी दरबारों के उत्तम घोडे जो हैं उन्हें चुरा लूं । यह विचार करके घोड़े चुराने गया तो देखां कि सभी घोड़ो की रखवारी स्वयं महाराज कर रहे है । इसलिये वहाँ से निकल कर विचार किया कि घोड़े की रखवारी में यहाँ महाराज हैं किन्तु जहाँ उत्सव हो रहा है वहाँ से धन चुरा लूं । वहाँ भी वही स्थिति हुई, सभी जगह उसे महाराज दिखाई देने लगे । इस तरह दो दिन तक श्रीहरि के विषय में जो अनुभव हुआ उससे मूलजी के हृदय में परिवर्तन हो गया । उसके मन में घृणा हुई और महाराज की शक्ति का ज्ञान हुआ । लेकिन उसके मन में चोरी करने की जो आदत थी वह तत्काल कैसे छूटेगी ?

वह अपने पाप को छुपाने के बदले महाराज की शरणागति स्वीकार कर लिया । चरण में गिरकर कहने लगा महाराज ? आपका प्रताप जब तक नहीं जानता था तभी तक यह पापाचार किया अब आपकी शरणागत हूँ । महाराज मन ही मन हंस रहे थे । उन्होंने पूछा अब तुम्हारी क्या इच्छा है । मूलजी ने कहा अब हमें आप अपने पास रखलीजिये ।

महाराज ऐसे जीव का कल्याण करने के लिए आतुर रहते हैं । उन्होंने कहा, नियम लेना है ? नियम लेने के बाद पालन करना पड़ेगा । हाँ नियम पालन करेंगे । महाराजने कहा तुम्हारी आदत तो विगड़ी हुई है, रात दिन लूट पाट करते रहते हो, इतने जल्दी तुम्हारी आदत सुधरेगी नहीं यहाँ भी आकर गड़वड़ करो तो ? नहीं महाराज हम तो लूटपाट करते हैं उसमे धनी लोगों के पैसे को गरीब में बांटते हैं । उनके धन को अच्छी जगह लगाते हैं । महाराज बोले, यह तुम्हारा विषय नहीं है । यह हमारा विषय है । जब हम मंदिर का काम करते हैं तब लोगो से पांचसो मांगते हैं तो वे हजार-दोहजार देते हैं । स्वप्न में भी मेरा संदेश वे याद करते हैं । तुम अधर्म के रास्ते से धन एकत्रित करते हो, वह ठीक नहीं है । जब तक तुम्हारे मन में यह विचार रहेगा तब तक नियम का पालन तुमसे सम्भव नहीं ।

नहीं महाराज ! मैं सदा नियम का पालन करता रहूँगा । यह सुनकर महाराजने उसके गले में कंठी बांधदी । नियम दिया कि आज से सभी गलत आदत छोड़कर उत्तम विचारों में मन लगाना । उसी समय अपने साथियों को विदा करके महाराज की सेवा में रह गया । जो अशक्य काम होता वह भी वह स्वयं करता था । व्रत, नियम, पूजा में सतत लगा रहता, अब उसे लोग मूलजी भगत के नाम से जानने लगे ।

इन्ही दिनो बाहर गाँव से कुछ महिलायें महाराज का दर्शन करने आयीं । एक के पास रुपये थे दूसरी के पास गहना था । दोनो ने महाराज के चरण में अर्पण किया । महाराज ने कहा अभी ये रुपये तथा गहना आप लेजाओ जब हमें जरुरत होगी उस समय हम मांगलेंगे । तब तक आप अपने पास रखो । ऐसा कहकर महाराज उन्हें वापस किये ।

उस समय मलूजी वहां खड़ा था । धन देखकर पुनः उसका मन विचलित होगया । उसने तुरंत कहा हां महराज ठीक कह रहे है अभी आप लोग यह धन घर लेजाइये, जब महाराज को जरुरत होगी तब ले आइयेगा, ऐसा कहते हुये उन महिलाओं के साथ बाहर आया और उनके घर का पता पूछ लिया ।

वे महिलायें धन लेकर अपने घर गयीं । महाराज डभाण गये । दो दिन के बाद मूलजी उन महिलाओं के घर पहुँच गया । उसकी दियानत तो धन पर थी । मन बिगड़ा हुआ था । यद्यपि वह भूल गया कि यह धन महाराज का है, मात्र रखने के लिये महाराज ने कहा है । उसे वापस तो करना ही पड़ेगा ।

महिलाओं को हुआ कि मूलजी तो महाराज का भक्त है । हमारे घर पधारे, हम लोगों की अहोभाग्य । खूब स्वागत की । मूलजीने कहा, महाराज ने संदेशा भेजा है कि जो मेरा धन है उसे व्यवस्थित रखना, जब आवश्यकता होगी तब मंगवालेंगे । महिलाओं ने कहा वह धन महाराज का ही है, आप कहिये तो आपको हम दे दें, लेजायेंगे ? वे निर्दोष भाव से कहीं । मूलजी का मन द्रवित होगया । वे महिलायें जहाँ

धन रखी थी सभी सत्यता ज्ञापन कर दीं । और कहीं कि अब रात्रि अधिक हो गयी है आप भी सोजाइये, हम थोड़ा देर से उठेंगी, पूजा दैनिक कृत्य करके प्रातः भेंट होगी । वे सभी दालान में सोगयीं मूलजी भी बाहर सोया, लेकिन उसे नींद कहाँ, उसका मन तो उस धन पर था । आधी रात हुई, चोरी करने की आदत वाला वह मूलजी गाड़े हुये धन को बाहर निकाल लिया और मिट्टी से ऐसा बराबर किया कि ख्याल भी नहीं आवे, धन लेकर चलता बना । प्रातः होते वे महिलायें देखीं तो मूलजी चला गया है । कुछ दिन के बाद उन महिलाओं को ख्याल आया कि गड़ा हुआ धन गायब हो गया है, लेकिन किस को कहें । पड़ोशी को कहें तो भी ठीक नहीं, अज्ञात रुपसे किसी का नाम देना ठीक नहीं । इसलिये वे महिलायें किसी से विना कहे मौन रहना उचित समझीं । मात्र भगवान को अपने मन में यह कहा करतीं कि हे प्रभु आपका धन हम रख नहीं पायी, कोई चुरालेगया । आप अन्तर्यामी है, आपसे कुछ छुपा नहीं है । मुझे इसका बहुत दुःख है कि हम आपके धन की रक्षा नहीं कर सकी ।

उधर मूलजी वह धन लेकर करीब सात गाँव जितना दूर जाकर एक तालाब के किनारे आराम कर रहा था । वहाँ काठी दरबारों के साथ महाराज को आते देखा । मूलजी को हुआ कि महाराज को जानकारी हो गयी है, इसलिये वे हमें पकड़ने आ रहे हैं, वह भागने लगा ।

महाराजने कहा मूलजी कहाँ भाग रहे हो, वापस आओ मूलजीने कहा महाराज हम थोड़ा जल्दी में थे इसलिये आपको पहचान नहीं पाये । महाराजने कहा हम तो आपको पहचानते है, आपको हम अभी भी भूले नहीं है । आपके कन्धे पर क्या है, मुझे भूख लगी है, लाओ कन्धे पर जो उसे दो । स्वयं उसके कन्धे से झोली निकाली तो उसमें आभूषण-रुपये थे । महाराज ने कहा यह तो धन है, खाने की वस्तु नहीं है । ऐसा कहकर मूलजी को वापस कर दिये । स्वयं अपने पास से वरफी निकालें और कहे कि लो भगत आप भी भूखे होंगे, खाओ ।

महाप्रभु की कैसी लीला ? कुकर्म का आचरण करने वाले को भी वे अपनाते हैं । यह जान रहे हैं कि अभी भी इसकी आदत छूटी नहीं है, चुराकर लाया है, तो भी उसे प्रसाद में बरफी खिला रहे हैं । मूलजी की हालत खराब होगयी, वह कांपने लगा । महाराजने कहा था कि तुम नियम का पालन नहीं कर सकते । चोर भी पकड़े चोरी का माल भी वापस कर दिये क्या बिडम्बना है । कोई एक शब्द भी नहीं बोले ।

पुनः मूलजी उस तालाब के किनारे आया, हाथ मुंख को धोया और प्रभु का स्मरण करके रोने लगा । अपनी गलती का स्मरण करके पुनः सुधरने की भावना से प्रभु की शरणागति करके उन महिलाओं के घर गया । उसके मन में था कि वे महिलाये हमें लकड़ी से मारेंगी लेकिन वे सभी मूलजी का स्वागत की ।

मूलजी ने आप बीती सभी वाते महिलाओं को सुनाई । और कहा कि पहले आप लोग इस डिब्बे में जो धन था वह है या नहीं यह देखले, बाद में अपने अपराधका और महाराज की लीला का वर्णन किया । महिलाये महाराज के इस अदृश्य लीला को सुनकर खूब आनंदित हुई ।

डभाण में महाराज सभा में बैठे हुये थे । वहाँ मूलजी पहुँच गया । महाराजने कहा जगह दो-जगह दो, मूलजी अत्यन्त शुद्ध होकर आ रहे हैं । ऐसा कहकर उन्हे पास बुलाये और माला पहनाकर सन्मान किये । मूलजी ? जीव भलें हमें भूल जाव लेकिन हम जीव को नहीं भूलते उसे बार-बार प्रेरणा देकर सन्मार्ग पर लाते हैं ।

पुरुषोत्तम नारायण श्रीहरि की यही बड़ाई है । जीव को बार-बार प्रेरणा देकर अपनी तरफ ले आते हैं ।

समस्त सत्संग की जानकारी हेतु

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदावाद के साधु नारायणजीवनदासजी (मुनि स्वामी) गुरु स्वामी मुकुन्दजीवनदासजीने श्रीजी महाराज द्वारा निश्चित की गयी मर्यादा का उल्लंधन किया है, अतः स्वतंत्र वर्तन करने से उन्हें श्री नरनारायणदेव देश में से निस्कासित किया जाता है । इसलिये कोई भी सत्संगी उन्हें किसी प्रकार का सहयोग न करें । इस की जानकारी सभी देश-विदेश के सत्संगियो को दी जा रही है ।

ली. कोठारी स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर

सत्संग बालपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

बिन समझे मत बोल

- शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

जीभ बहुत विचित्र अवयव है। ब्रह्माजीने शरीर के सभी अवयब बनाने के बाद जीभ बनाये और मुख के अन्दर व्यवस्थित कर दिया । जीभ को मुलायम बनाया । इसमें कोई हड्डी नहीं है। ब्रह्मा को ऐसा लगा कि हाथ से तथा पैर से पाप होगा, जीभ से कोई पाप नहीं होगा । कारण यह कि इसमें हड्डी नहीं है। एकदम मुलायम ! यह विचारी क्या पाप करेगी । बाद में ब्रह्मा को ख्याल आया कि यह जितनी मुलायम है उतना अधिक पाप करती है । इसलिये उन्होंने जीभ के पाप को रोकने के लिये जीभ के चारो तरफ भाले की तरह नुकीले दातों का किला खड़ा कर दिया। फिर भी बत्तीस दांतो के बीच रहकर उन्हें दगा देकर बाहर निकल जाती है।

जीभ में से अमृत झरता है। जहर भी झरता है। तलवार की घाव मिट सकती है, परंतु जीभ की घाव कभी मिट नहीं सकती। सामने के हृदय में बाण की तरह लगे ऐसा शब्द नहीं बोलना चाहिये । जब चाहे तब जो चाहे बोलने से भयंकर परिणाम होता है।

द्रोपदी के विना विचारे एक वाक्य बोलने से (अंधो को अंधा होता है।) दुर्योधन को वज्र के समान लगा, परिणाम स्वरुप विश्वयुद्ध के समान महाभारत युद्ध हुआ। महाभारत के युद्ध में अर्जुन विना विचारे संकल्प कर दिये कि कल सूर्यास्त होने से पूर्व जयद्रथ का बधनहीं किया तो अग्नि में स्नान कर लूंगा। दूसरे दिन सूर्यास्त तक जयद्रथ का बध नहीं कर सका। इसलिये अर्जुन अग्नि स्नान करने के लिये तैयार हो गया। अग्नि प्रज्वलित कर दी गयी । उसमें प्रवेश करने जा रहा था उसी समय भगवान कृष्णने कहा अर्जुन ? गांडव को साथ लेकर प्रवेश करो, इसके बाद गांडीव किसी काम में नहीं आयेगा । अर्जुन को जलता देखने के लिये जयद्रथ भी वहां आया। श्रीकृष्णा भगवान ने कहा बादल के कारण सूर्य दिखाई नहीं दे रहा था, सूर्यास्त नहीं हुआ है, इसलिये गांडीव को हाथ में लिया और सामने खड़े जयद्रथ के ऊपर बाण चलाया, जयद्रथ का बधहो गया। भगवान थे इसलिये रक्षा हो गयी, अन्यथा विना कारण के अग्नि स्नान करना पड़ता। इसलिये विना विचारे नहीं बोलना चाहिये।

श्रीकृष्ण भगवान अर्जुन से कहे कि आपके परिवार में सभी लोग विना विचारे बोलते हैं। भीष्म भी विना विचारे बहुत बड़ी भीष्म प्रतिज्ञा कर लिये कि मैं यावत् जीवन विवाह नहीं करुँगा। जिसका परिणाम यह हुआ कि पांडव - कौरव का महाभारत युद्ध हुआ। इसीलिये स्वामिनारायण भवानने शिक्षापत्री में जिह्वा को जीतने की वात की है। किसी को मिथ्या अपवाद नहीं लगाना चाहिये । जीभ से किसी को गाली या निंदा की बात नहीं करनी चीहिये।

मित्रों ! ऐसे महानपुरुष अर्जुन भी जीभ द्वारा स्वयं आपत्ति मोल लेलिये तो हम सब की क्या बात ?

एक सुन्दर उक्ति है -

बोली बोल विचारिये, विन समझे मत बोल।
पहले भीतर तोल के, बाहर पीछे बोल ॥

इसलिये वात-वात में त्वरित जहाँ तहाँ बोलना अज्ञान की पहचान है। मित भाषण यह ज्ञान का लक्षण है। जिस तरह स्वास्थ सुरक्षा के लिये युक्त आहार का विधान है, इसी तरह घर कुटुंब, विद्यालय, आस-पास, पडोशी, स्नेही, मित्रवृन्द तथा सत्संग में भी अच्छा सम्बन्धबना रहे इसके लिये विचारकर बोलना चाहिये और वैसा वर्तन करना चाहिये।

●

देवना भगवान भूल नहीं जांय

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

भगवान भाव के भूखे हैं। भक्त सद्भाव से परिपूर्ण है। जब-जब भक्त संकल्प करते है, भगवान उनके संकल्प को पूरा करते हैं। जब जब भक्त भगवान के लिये तन, मन, धन अर्पण करते हैं, तब-तब भगवान भक्त के अधीन होकर उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। भक्त की निष्ठा, श्रद्धा सेवा भाव को देखकर भक्त को गले लगालेते हैं तो कभी कभी हार (पुष्पाला) तो कभी अंग वस्त्र देकर प्रसन्न करते हैं।

भक्तों के लिये यह सुख अक्षरधाम के सुख समान हो जाता है। कितने भक्त तो नये-नये नुस्खे निकालकर भगवान को प्रसन्न करने की कोशिष करते हैं -

ऐसे एक भक्त भगवान दास की वात वांचते है -

एक समय भगवानदासभाई विचार किये कि बहुत समय होगया, महाराज का दर्शन नहीं हुआ। संतो का भी दर्शन नहीं हुआ। इस प्रकार का मन में संकल्प होने लगा। गर्मी का समय इस समय कुछ काम भी नहीं है, आम्रफल बाग में खूब पक कर तैयार है, इन्हें वेचने से अच्छा कि इन फलों को महाराज

(अनुसंधान नं. १८ पर)

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीके आशीर्वचन में से "गुणातीतलक्षण क्या है"

संकलन - कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)•

जो लोग मनुष्य शरीर प्राप्त करके विषय राग से उपरत होते हैं उन्हें गुणातीत कहते हैं। गुणातीत का अर्थ होता है तीनो गुणों से रहित। सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण इन तीनो गुणों को जो जीत ले उसे गुणातीत कहते हैं। मनुष्य जीवन प्राप्त करने का यही ध्येय रखना चाहिये कि इन तीनो गुणों से रहित हों। अन्यथा पुन: शरीर धारण करना पड़ेगा। सामान्य रीति से भौतिक जगत में हम जो ज्ञान प्राप्त करते हैं वह प्रकृति के तीनो गुणों से दूषित देखा जाता है। जो ज्ञान भौतिक प्रकृति के तीनो गुणों से दूषित न हो उसे दिव्य ज्ञान कहेंगे। ऐसे दिव्य ज्ञान के लिये सद्गुरु के उपदेश द्वारा आध्यात्मिक स्थिति, अपनी भौतिक शरीर, अपनी इन्द्रियों के प्राकृतिक गुण इत्यादि को जाना जा सकता है। इस तरह जो अपने वास्तविक स्वरुप को जान लेता है वही दिव्य जीवन जी सकता है। जब तक मनुष्य को आध्यात्मिकता की सहायता नहीं मिलती तब तक वह किस स्थिति में है उसे ही ख्याल नहीं। आध्यात्मिक गुरु के मिलने पर यह स्थिति समझीजा सकती है। जो मनुष्य इस भौतिक जीवन से ऊपर उठना चाहता है उसे इन तीनो गुणों का अतिक्रमण करना होगा। जब मनुष्य ऐसे दिव्य ज्ञान में स्थित होजाता है तब परम पुरुष की स्थिति हो जायेगी। पूर्ण दिव्यज्ञान प्राप्त करके जन्म-मरण के चक्र में से मुक्त होकर परमात्मा के साथ एक भाव की स्थिति हो जायेगी। जो कोई दृढ संकल्प करे तो उसे सत्वगुण का वरदान मिल सकता है। सत्वगुण से आगे निकल कर शुद्ध सत्व में स्थिर हो जायेगा। जिसमें रहकर ईश्वरीय विज्ञान को समझ सकता है। सत्वगुण में रहने वाला भौतिक दु:खों से प्रभावित नहीं होता। सत्वगुण में रहने वाले को ऐसा होने लगता है कि मैं ज्ञानी हो गया हूँ। अन्य मनुष्यों की अपेक्षा मैं श्रेष्ठ हूँ। इस प्रकार की अहं भावना होने से उस व्यक्ति का मोक्ष नहीं होता, मुक्ति उसकी बाधित हो जाती है। रजोगुण की उत्पत्ति अमर्यादित इच्छा तथा तृष्णा के कारण होती है। रजोगुणी मनुष्य राष्ट्र में तथा समाज में सन्मान चाहता है। सुन्दर स्त्री, अच्छी संतान तथा घर के साथ सुखी परिवार की इच्छा रखता है। जब तक मनुष्य इसके पीछे दौड़ता रहेगा तब संसार चक्र में गमनागमन करना पड़ेगा। अज्ञान के प्रभाव में आकर मनुष्य यथार्थ की पहचान नहीं करपाता। परिणाम स्वरुप आध्यात्मिकता की तरफ से उत्मुख हो जाता है। जब तमो गुण में वृद्धि होती है तब अंधकार, जड़ता, उन्माद तथा मोह से आक्रान्त वह व्यक्ति रहता है।

•

भक्तिसुधा

घंटारव

- रसीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

भगवान की पूजा में घंटा का महत्व का स्थान है। वह छोटा-बड़ा हो सकता है। इसे संस्कृत में गरुडघंटी तथा गुजराती में घंटडी कहते हैं। भगवान को नैवेद्य लगाते समय, आरती, धूप, दीप इत्यादि करते समय घंटी बजाई जाती है। भगवान के सामने घंटी बजाने का आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक कारण है।

तात्विक दृष्टि से परब्रह्म के पास पहुँचने के लिये नादब्रह्म को समझना आवश्यक है। नादब्रह्म को प्राप्त करके ही परब्रह्म को पाना सम्भव है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से घंटी बजाने से एक विशेष प्रकार की ध्वनि निकलती है जिससे सम्पूर्ण वातावण एकरुप में होजाता है। इससे मन एकाग्र होता है। परमात्मा का दर्शन, वंदन, ध्यान करने के लिये मन का एकाग्रहोना आवश्यक है। घंटे की आवाज से अगल बगल का वातावरण अनुकूल तो होता है साथ में ऐसे विषाक्त जंतुओं को अपने अनुकूल बना लेना है। इस ध्वनि की आवाज से तन, मन, प्रफुल्लित होता है साथ में कई प्रकार के रोग भी दूर होते हैं।

महाभारत का एक प्रसंग है। महाराज युधिष्ठिर राजसूय यज्ञ किये उस समय सभी राजाओं पर विजय प्राप्त किये। लेकिन जरासन्धपर विजय पाना अशक्य था। इसलिये कि जन्म के समय उसे ऐसा वरदान मिला था। ऐसा कहा जाता है कि जरा नामक राक्षसी ने जरासंघ के दो भाग को मिलाकर सजीव किया था। इसीलिये उसका नाम जरासंघ रखा गया। उसके शरीर के दो भाग होने पर भी वह मरता नहीं था। इस वात को श्रीकृष्ण जानते थे। इसलिये द्वन्द्व युद्ध में कपट करके मारने के लिये पांडवो को सलाह दिये।

जरासंधको जीतने के लिये भीम, अर्जुन, श्रीकृष्ण मगधके प्रवेश द्वार पर जाकर खड़े हो गये। उसके यहाँ ऐसी व्यवस्था थी कि जो शत्रु आता, उसके दरवाजे पर आते ही घंट बजने लगता। इससे वह सावधान हो जाता था। युद्ध के ध्येय को गुप्त रखकर वेश बदलकर भीम, अर्जुन, श्रीकृष्ण मुख्य द्वार पर पहुँचे की घंट बजने लगा। श्रीकृष्ण उस घंट को बजने से रोकने का काफी प्रयास किये लेकिन घंट बजना बन्द नहीं हुआ। तब श्रीकृष्णने कहा तुम कोई वरदान मांगलो, यह सुनकर घंटने कहा कि जब तक लोग हमें बजाये नहीं तब तक

आप अन्न-जल कुछ स्वीकार नहीं कीजियेगा । श्रीकृष्ण भगवान एवमस्तु कहकर उसे अपने पास रखे और द्वन्द्व युद्ध में जरासंघ का बधकरवाये ।

महाभारत के इस प्रसंग से घंटानाट की उपयोगिता बढी है । देव सेवा का वह अनिवार्य अंग बन गया । भक्त जब तक घंटी नहीं बजावे तब तक भगवान भोग को स्वीकार नहीं करते । आरती के समय तो विना घंटी के आरती करना ठीक नहीं है । इसलिये यह घंटारव सहेतुक है । देवकी सेवा में घंटी अवश्य बजाना चाहिये ।

•

श्रीगुणग्राहिणे नमः

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

वचनामृत में श्रीजी महाराज वारंवार कहा करते कि किसी भी सत्संगी को अन्य में कभी भी दोष नहीं देखना चाहिये । इस तरह की आज्ञा अन्यत्र किसी शास्त्र में नहीं मिलती है । भक्ति के मार्ग में जब किसी में दोष देखने लगें तो समझना चाहिये कि पतन निश्चित होने वाला है । कितना भी गुणवान् हो उसका पतन होजायेगा । किसी का अवगुण नहीं लेना चाहिये । सदा गुण लेना चाहिये ।

एक समय महाराज संतो के साथ गाँव-गाँव फिरने की आज्ञा किये । संत गाँव-गाँव घूमते हुये वसो गाँव में पहुँच गये । गाँव के बाहर सभी ठहरे । भक्तलोग कथा सुनने आते । उन्हें सुन्दर उपदेश देते हैं कि संसार का सुख मृगजल के समान है । इससे सुख नहीं मिलता । रात्रि के समय नियम चेष्टा करके सो गये । नारायणदास भोले थे । शंकरानंद स्वामी स्वभाव के तेज थे । शंकरानंद स्वामी प्रातः होते ही नारायणदास के पैर में ढेंस मारकर कहे कि क्यों बैल की तरह सोरहे हो । ख्याल नहीं प्रभात होगयी । इस तरह वारंवार नारायणदास को परेशान करते थे ।

स्वामिनारायण भगवान ने शंकरानंद को स्वप्न में दर्शन देकर कहा कि क्यों खराब बोलते हैं, क्यों संत को पैर से मारते हैं । बैल जैसा क्यों बोलते है । इसी तरह जितनी बार बोलोगे । उतनी बार बैल की योनि में जन्म लेना पड़ेगा । इसलिये वाणी को विचार कर बोलना चाहिये । मनुष्य की परीक्षा उसकी वाणी से होती है । शंकरानंद स्वामी महाराज से मांफी मांगे कि पुनः अब गल्ती नहीं होगी । महाराज ने कहा मैं माफ नहीं करुँगा । आप नारायणदास जी से माफी मांगिये । वे माफ कर देंगे तो बैल की योनि में नही जाना पड़ेगा ।

शंकरानंद दौड़ते हुये नारायण के पास जाकर माफी मागे । बाद में महाराज भी माफ कर दिये । किसी का द्रोह नहीं करना चाहिये ।

प्रेमानंद स्वामीने प्रार्थना की कि आप ऐसा कीजिये कि आपके भक्त का कभी द्रोह न हो । संत द्रोह न हों, गुरु द्रोह न हो, देव द्रोह न हो, ऐसा आशीर्वाद दीजिये । गुणातीतानंद स्वामीने भी कहा है कि दूसरे के दोष को देखने से अच्छा अपना दोष देखना चाहिये । यदि जिन्दगी में सुखी होना हो तो सभी में गुण देखना चाहिये । सभी में जो गुण हो उसे ग्रहण करने की आदत डालनी चाहिये । इस तरह की आदत है तो अन्तःकरण शुद्ध-निर्मल हो जायेगा । गुणग्राहिता न हो तो अक्षरधाम जाना संभव नहीं होगा । इस लिये सभी को चाहिये कि सभी में से गुण ग्रहण करें ।

•

सत्संग सभा द्वारा अमृत का आस्वाद

- सां.यो. उषाबा गुरु सां.यो. कमलाबा (सुरेन्द्रनगर)

परमकृपालु इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति सनानत समस्त उत्तर विभाग के महिलावर्ग की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवाला के शुभ संकल्प से रामपुरा गाँव के नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में १५ वें पाटोत्सव के शुभ अवसर पर शिबिर का आयोजन आषाढ शुक्ल-८ ता. १८-७-१० रविवार को किया गया था ।

पाटोत्सव के अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी का स्वागत किया गया था । इस स्वागत में असंख्य महिलाओं ने भाग लिया था । नूतन बहनों के मंदिर में भगवान का अभिषेक प.पू. गादीवालाजी के वरद् हाथों किया गया था । इसके बाद अन्नकूट की आरती की गयी थी जिसका दर्शन करके सभी धन्य हो गये थे ।

इस उत्सव में अलग-अलग स्थानों से सां.यो. बहने उपस्थित थी । सां.यो. बहने सामयिक व्याख्यान करके सभी को आनंदित की थी । इस प्रकार के व्याख्यान को सुनकर सम्पूर्ण सत्संग में एक अनोखी लहर फैल गयी । इसका कारण यह है कि आज के पहले लोग सां.यो. बहनों के मुख से इस तरह का सुंदर व्याख्यान कभी नहीं सुनी थी । सभी भक्त महिलायें कथामृत का रसपान करके कृतार्थ हो गयी ।

रामपुरा नूतन स्वामिनारायण मंदिर में कंचनबहन, लाभुबहन, ललिताबहन इत्यादि का मार्ग दर्शन उत्तम था । इसका संचालन सुरेन्द्रनगर की कोकिला बहन ने किया था । बाद में सभा की पूर्णाहुति के अवसर पर पूज्या गादीवालाजीने बताया कि भगवान की इच्छा के विना एक भी कार्य होना संभव नहीं है, अतः उन्हीं की इच्छा में अपना जीवन होन चाहिये । मनुष्य तथा मुमुक्षुत्व ये दोनो दुर्लभ है । मनुष्य शरीर प्राप्त करके यदि भगवान की प्राप्ति न हो सके तो शरीर पाने का क्या लाभ । मानवता तथा दानवता के बीच में द्वन्द्व युद्ध चलती ही रहती है । जिसमें ९०% दानवता की जीत

होती है मात्र १०% प्रतिशत मानवता की जीत हो पाती है। जो व्यक्ति भगवान की तरफ गति करेगा उसका भगवान अवश्य भला करेंगे। भगवान की भावना अन्दर से होनी चाहिये। शरीर क्षण भंगुर है। माया-मोह का परित्याग करके भगवत् प्राप्ति के लिये सतत प्रयत्न करते रहना चाहिये। सूर्य उगते समय खिड़की वन्द रहेगी तो सूर्य का प्रकाश भीतर कैसे आयेगा। इसी तरह परमात्मा का अनुभव करना हो तो अन्दर से परमात्मा को बुलाना पड़ेगा।

एक भिखारी रोड़ के किनारे बैठकर भीख मांग रहा था। वहाँ से एक संत निकले, उन्होंने कहा भाई ? तुम भीख क्यो मांगते हो ? तुम तो धनवान हो। भिखारीने कहा स्वामी जी मैं भिखारी हूं, धनवान कैसे ? संत ने कहा जहाँ तुम बैठे हो वहाँ नीचे खजाना है। तुरंत आसन हटाकर खोदा तो सोना का घड़ा मिला। इसी तरह अपने भीतर खजाना रुपी परमात्मा का निवास है। उन्हें पाने के लिये अन्तःकरण को निर्मल बनाना पड़ेगा और खोजना पड़ेगा। मोह-माया रुपी मिट्टी को हटाने पर निर्मल मन रुपी गड्ढे में परमात्मा अवश्य मिलेंगे।

अपना संप्रदाय शुद्ध सम्प्रदाय है। गुरु मुखी संप्रदाय है। जीवन जीने से भक्ति मार्ग, मोक्ष मार्ग सरल हो जाता है। कोई किसान खेत में काम करता हो, भले वह खेत दूर हो तो भी उसकी पत्नी भोजन लेकर अपने पति के पास ही जायेगी भले दूसरे का पति नजदीक के खेत में काम करता हो उसे भोजन नहीं देगी। इसी तरह अपने इष्टदेव भगवान नरनारायणदेव हमसे कितने भी दूर हो हम उन्हीं के पास आयेंगे न कि अन्य के मंदिर में या अन्य के सत्संग में। दूसरे की उपासना एक पति अर्थात् एक निष्ठा उपासना नहीं कही जा सकती। आचार्य महाराजश्री जिस मूर्ति की प्रतिष्ठा करें उसी की सेवा पूजा करनी चाहिये। पूजा में श्री नरनारायणदेव को रखना चाहिये। इस तरह का आशीर्वाद सभी को दिया था। सभी अपने जीवन को कृतार्थ समझीं थी। बाद में सभा की पूर्णाहुति की गयी थी।

पेज नं. १५ से आगे

सत्संग बालवाटिका

तथा संत खाये तो अच्छा होगा। ऐसा विचार करके भगवानदासभाई एक टोपला में पके आम को मस्तक पर रखकर भगवान का स्मरण करते हुये चल दिये।

"हूं तो गिरधर जोवा जईश,
मा मुने बारीश मां।
मारा उर मां छबीलाजीने पोवारे,
मेणले मारीश मां ॥"

नंद संतो के कीर्तन का गान करते हुये तीन दिन में श्रीहरि के पास पहुँचे। श्रीहरि के चरणों में टोपला रखकर दंडवत् प्रणाम करने लगे। श्रीहरि ने भी उनका हृदय से आदर किया। आइये भक्तराज ! यह सुनते ही भक्तराज के तीन दिन की थकान दूर हो गयी। भगवानदास कुशल क्षेम तो है न ? हाँ महाराज, आपकी दया से सब कुशल मंगल है। आपकी याद आती थी, दर्शन की खूब इच्छा हुई, इसलिये आपके दर्शन हेतु तथा आपकी वाणी सुनने के लिये एवं संतो की वाणी सुनने के लिये आज यहाँ आया हूं।

स्वामिनारायण भगवान का दर्शन करके भगवानदास सभा में बैठे। वहाँ एक आश्चर्य हुआ।

सुराखाचर के पुत्र उम्र में काफी छोटे थे, जिनका नाम नाथा खाचर था। उनकी दृष्टि आम्रफल पर पड़ी, बाल स्वभाव के कारण वे आगे बढे। महाराज इस रहस्य को समझ गये। महाराज एक फल लेकर नाथा की तरफ किये और कहे कि आम खाना है। सुनते ही नाथा महाराज के पास दौड़ गया। महाराज से कहने लगा महाराज ! मुझे आम दीजिये ? महाराजने कहा नाथा ? तूं पहले अपने गले के सोने की चयन दो तो दूं।

सभा यह दृश्य देख रही थी। नाथा अपने गले से सोने का चयन निकाल कर महाराज के चरण में रखदिया। आम लेकर सुराखाचर के पास चला गया। नाथा खूब प्रसन्न था कि मुझे आम का फल मिल गया।

बालक के इस व्यवहार से भक्तों को समझाने लगे कि, एक आम की किमत अधिक है या सोने की चैन की ? इसका उत्तर स्पष्ट है कि सोना ही अधिक किमत वाला है। एक, चयन में से कितने ही आम आसकते हैं। फिर भी एक आम के लिये बालक ने सोने का चयन दे दिया।

कारण यह कि बालक को यह पत्ता नहीं कि चयन आम की अपेक्षा कीमती है, उसे इसका ख्याल होता तो नहीं देता।

सोनें की जगह पर भगवान है। आम की जगह जगत का विषय है। बालक जैसा अज्ञानी जीव को इसकी खबर नहीं। भगवान को यथार्थ रुप में पहचान नहीं सका। इसलिये भगवान की अपेक्षा विषय को अधिक जानता है। भगवान को भूलकर विषयों में आसक्त होता है। ऐसे अज्ञानी जीव को इसकी भी नही खबर कि चिंतामणी के समान भगवान है, उन्हीं की शरण में जाना चाहिये, उन्हीं की कृपा होने से सभी प्रकार के सुख की प्राप्ति सम्भव है।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव संपन्न

आषाढ शुक्ल पूर्णिमा अर्थात् गुरुपूर्णिमा का दिन । स्वामिनरायण संप्रदाय के आश्रित त्यागी-गृही के गुरु प.पू. आचार्य महाराजश्री हैं । श्री नरनारयणदेव के सांनिध्य में यह उत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था ।

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप श्री नरनारायणदेव की आरती उतारकर सभा मंडप में विराजमान हुये थे । निरंतर वरसात होने पर भी अहमदाबाद शहर तथा गाँवो से एवं विदेश से असंख्य हरिभक्त गुरु का पूजन-अर्चन करने के लिये जीवन चरितार्थ करने के लिये उमड़ पड़े थे । सभा मंडप में सर्व प्रथम विद्वान पंडितों द्वारा स्व स्तिवाचन, पूजन,अर्चन, आरती के बाद क्रमशः संत, गृहस्थ, यजमान परिवार द्वारा पूजन-आरती की गयी थी । मोरबी के श्री नवीनभाई मांडलियाने प.पू. महारजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री को क्रमशः ११ कि. ५ कि. ढाई कि. के वदाम की माला पहनाकर संमान किया था । इसी तरह उनकी पत्नी प.पू. गादीवालाश्री का माला से संमान की थी । मुख्य यजमान श्री कौशिकभाई पाटडियाने दिव्य लाभ लिया था । अहमदाबाद मंदिर की फूल मंडलीने आज के दिन ३७ फूट का गुलाब का हार महाराजश्री को पहनाया था । प.पू. लालजी महाराजश्री बाल मंडल के तेजस्वी विद्यार्थियो का सन्मान किये थे । निष्ठावान हरिभक्तोंने जो म्युझियम के लिये दान का प्रवाह बहाये थे, उनका सन्मान किया गया था । इस अवसर पर अलग-अलग धाम से संत पधारे हुये थे । अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा स.गु. ध्यानी स्वामीने मोक्षमार्ग में गुरु की क्या आवश्यकता है इसकी अनिवार्यता को समझाया था । प.पू. बड़े महाराजश्री मार्मिक आशीर्वचन दिये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री मौन होकर शुभार्शीवाद दिये । अन्त में सभी संतोने पुष्पमाला से तथा गृहस्थ चरण में भेंट रखकर प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री का चरण स्पर्श किये थे । उत्सवी मंडल श्री नरनारायणदेव के समक्ष कीर्तन-धून करके उत्सव किये थे ।

– नारायणमुनि स्वामी

वडनगर मंदिर में पाटोत्सव

ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी वडनगर में श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का ४९ वां वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से ज्येष्ठ कृष्ण-१२ को मंहत स्वामी हरिसेवादासजी तथा महंत शास्त्री स्वा. नारायणव्ललभदासजी के मार्गदर्शन में विसनगर के श्रीमती मोदी कांताबहन द्वारकादास के पुत्र श्री रमेशभाई द्वारकादास तथा उनकी धर्मपत्नी यशोधराबहन रमेश परिवार की तरफ से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से धूमधाम के साथ मनाया गया था । इस प्रसंग पर अभिषेक दर्शन, अन्नकूट दर्शन, प.पू. आचार्य महाराजश्री का दर्शन का लाभ लेकर हरिभक्त जीवन को कृतार्थ किये थे । इस अवसर पर अहमदाबाद से महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा शास्त्री स्वा. आनंदजीवनदासजी, स्वा. विश्वस्वरुपदासजी तथा सोमाभाई डी. मोदी एवं मोदी नवीनचंद मणीलाल, मोदी प्रफुल्लभाईने प्रसंगोचित प्रवचन किया था । सभा का संचालन, स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया था । पुजारी स्वा. अभिषेकप्रसाददासजीने पूर्व तैयारी करके प्रसंग को सुंन्दर रुप दिया था ।

इस शुभ प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आगामी श्री घनश्याम महाराज का सुवर्ण जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाने की आज्ञा की । अंत में सभी को आशीर्वाद देकर सर्वोदय सेवा के ट्रस्टी श्री सोमाभाई डी. मोदी तथा वडनगर पालिका के चीफ आफिसर श्री सतीषभाई पटेल का पुष्पहार से सन्मान किया था ।

– शा. अभिषेकप्रसाददासजी

इडर मंदिर का पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजगी की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का १६४ वा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प्रातः काल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार विधिसे पूजन किया गया था ।

साबरकांठा प्रदेश के सत्संगियो की उपस्थिति में सभा हुई थी । यजमान भाईचंद्रभाई चतुरभाई पटेल ने प.पू. आचार्य महाराजश्री को भेंट पूजा करके आरती की थी । बाद में संतो ने प्रेरक प्रवचन किये । अंत में महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस प्रसंग पर होमात्मक महापूजा तथा

अन्नकूट का आयोजन किया गया था । को. सत्यसंकल्पदासजीने सुंदर सेवा की थी । सभा संचालन वासुदेवचरण स्वामीने किया था ।

– शा. हरिजीवनदासजी, हिंमतनगर

एप्रोच बापूनगर मंदिर में ब्लड डोनेशन केम्प संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामीकी प्रेरणा से ता. ४-७-१० रविवार को रेड क्रोस सोसायटी द्वारा अहमदाबाद सिविल होस्पिटल के रोगियो के लाभार्थ श्रीहरि की आज्ञानुसार रोगियो के लिये ब्लड डोनेशन केम्प का आयोजन किया गया था । जिस में कुल ५३ जितने रक्तदाता रक्तदान किये थे ।

– गोरधनभाई सीतापरा

श्रीहरि के प्रसादीभूत डांगरवा गाँव में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाहन पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट के महंत स्वामी की प्रेरणा से प्रसादीभूत डांगरवा गाँव में ता. ९-७-१० से ता. १३-७-१० तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाहन पारायण स्वा. रामकृष्णदास के वक्तापद पर संपन्न हुआ था ।

श्रीमती जीवतीबहन कालीदास सोमादास पटेल के शुभ संकल्प से अ.नि. जडीबा सोमदास पटेल परिवार पारायण के मुख्य यजमानने अलौकिक लाभ लिया था । यजमान परिवार के आमंत्रण पर अगल बगल के गाँव के हरिभक्त कथा श्रवण का लाभ लिये थे ।

ता. ११-७-१० को बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्रीराजा दर्शन आशीर्वाद का लाभ देने के लिये पधारी थी । ता. १३-७-१० को पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी, श्री नरनारायणदेव के पुजारी स्वामी इत्यादि संत अलग-अलग धाम से पधारे हुये थे । प्रेरणादायी प्रवचन भी किये थे । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । कथा प्रसंग पर सुंदर कांड पाठ, सत्संग कीर्तन, घनश्याम जन्मोत्सव तथा रास-गर्बा का आयोजन किया गया था । सभा संचालन नारायणघाट के महंत स्वा. (छोटे पी.पी. स्वामी) तथा शा. चैतन्यस्वरुपदासने किया था ।

– जयवल्लभदास

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये उवारसद मंदिर द्वारा प्रसादी के दरवाजा की भेंट

प.पू. बड़े महाराजश्री का अलौकिक संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युजियम का निर्माण कार्य तीव्रगति से चल रहा है । इस म्युझियम की तुलना संसार में कही नहीं हो सकती। इसलिये कि इस म्युजियम में श्रीहरि के प्रसादीभूत वस्तुओं का संग्रह स्थान बनाया गया है, जब कि अन्यत्र लौकिक वस्तुयें रखी जाती है । इस म्युझियम में उन दिव्य वस्तुओं का दर्शन करके सभी अपने जीवन को धन्य कर सकेंगे । इस के लिये संत तथा गृहस्थ सभी जिन्हें परम्परा में प्रसादी की वस्तु मिली है वे प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री को उन प्रसादी की वस्तुओं को अर्पण कर रहे हैं ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव का दरवाजा जिसे वर्षो पूर्व पू. स्वा. गोपीवल्लभदासजी तथा उनके गुरु पूज्य ध्यानदासजी स्वामीने उवारसद मंदिर में लाकर उपयोग किया था । इस मंदिर को १११ वर्ष पूर्ण हो रहा है, इसलिये इस प्रसादी के दरवाजा को गाँव के हरिभक्त प.पू. बड़े महाराजश्री को म्युझियम के लिये अर्पण किये थे । प.पू. बड़े महाराजश्री गांव जनों के लिये हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बहुत सारे संतहरिभक्त अपने पास प्राप्त प्रसादी की वस्तु प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पण करने वाले हैं ।

– घनश्यामभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में ऊंझा में अद्भुत झूला दर्शन

ऊँझा (ब्राह्मण शेरी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १-८-१० से ता. ३०-८-१० तक ठाकुरजी के समक्ष भव्य झूले का दर्शन होगा । झूले का उद्घाटन प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू.श्रीराजा के शुभ हाथों से संपन्न होगा । सभी हरिभक्त दर्शन का लाभ लें ।

– शा.स्वा. केशवप्रसाददासजी, अहमदाबाद

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के विषय में

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के देखरेख में श्री नरनारायणदेव

धार्मिक शिक्षण विभाग सुंदर रीति से कार्यरत है।

प्रत्येक संचालक को सूचित किया जाता है कि आगामी परीक्षा ता. २६-१२-१० रविवार को लीजायेगी । इस वर्ष परीक्षा केवल २ भाग की लीजायेगी । जिसकी जानकारी थोड़े समय में की जायेगी ।

अपने केन्द्र के परीक्षार्थियों की नामावली त्वरित भेजवायें। प.पू. लालजी महाराजश्रीने ही नये मंदिर में तथा गांवो में नये-नये केन्द्र चलाने की आज्ञा दी है। - (देवाणी रणछोडभाई वी. पटेल, संचालक, श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा

यहाँ पर ज्येष्ठ शुक्ल-१० को सर्वोपरि श्रीहरि के अन्तर्ध्यान तिथि के निमित्त ता. २१-६-१० को श्री डाह्याभाई चेलाभाई बूटिया के घर वचनामृत का पठन किया गया था । ता. २२-६-१० एकादशी को सत्संग मंडल ने उनके घर ग.प्र. १ का पठन किया गया था । महाराजश्री की महिमा का वर्णन किया गया था । एक वार निश्चय हो जाय तो परिवर्तन नहीं होता, फिर तो भगवान के रजिस्टर में वह नाम लिख दिया जाता है । इस तरह अनेकों उदाहरण देकर युवानों को उत्साहित किया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों लिखी गयी "वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" नामक पुस्तिका सभी को अर्पण की गयी थी । श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून, कीर्तन, आरती इत्यादि की गयी थी ।

अंत में श्री नरनारायणदेव में निष्ठा तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री में निष्ठा का भाव सभी में सदा बना रहे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना के साथ सभी विसर्जित हुइ थी। - श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कालीयाणा

श्री स्वामिनारायण मंदिर इलोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २०-६-१० को यहाँ पर सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिसमें हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी तथा करजीसण के पुजारी जसुभगत ने कथा, कीर्तन इत्यादि का सुदंर लाभ दिया था । यहाँ की सेवा में जसुभाई कलेक्टर कनुभाई, कांतिभाई लगे रहे । इलोल के कोठारी किरीटभाई इत्यादि हरिभक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी। - नटवरसिंह डी. सोलंकी

श्री स्वामिनारायण मंदिर खावड मूर्ति प्रतिष्ठा

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पुराणी नारायणचरणदासजी की प्रेरणा से तथा घनश्याम स्वामी, को. रतिभाई नारणदास पटेल तथा अनेक संत हरिभक्तों के सहकार से मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होते ही ता. ४-६-१० से ६-६-१० तक मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धत्रिदिनात्मक पारायण स्वा. नारायणवल्लभदासजीके वक्तापद पर संपन्न हुआ था । ता. १० को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम के साथ मूर्ति प्रतिष्ठा हुई थी । प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी पधारे हुये थे । संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । इस मंदिर के निर्माण में सभी छोटे-बड़े की सेवा सराहनीय थी। - कोठारीश्री खावड

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से ज्येष्ठ शुक्ल-१० को श्रीजी महाराज के अन्तर्ध्यान तिथी के निमित्त ब्रह्मानंद सभा मंडप में श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख ज्येष्ठ शुक्ल-९ को रात्रि ९ बजे से ज्येष्ठ शुक्ल-१० प्रातः १०-१० तक श्री स्वामिनरायण महामंत्र की अखंड धुन की गयी थी । साक्षात् श्री घनश्याम महाराज के समक्ष संत हरिभक्त श्रीहरि के स्वधाम गमन की याद करके भाव विभोर हो गये थे । सभी भगवान का दर्शन करके तथा धुन कीर्तन करके प्रसन्न हुये थे । पूर्णाहुति के बाद हरिभक्तों को प्रसाद के रुप में जलेबी वितरण की गयी थी । समग्र व्यवस्था महंत स्वा. नारायणप्रसाददासजी तथा आत्मप्रकाशस्वामीने की थी ।

- नवलदान गढवी

श्री स्वामिनारायण रवेवडिया (ता. मोरबी) मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. गोपालचरणदासजी की प्रेरणा से एवं उनके शिष्य सूर्यप्रकाशदासजी, समस्त सत्संग मंडल के सहयोग से यहाँ के नूतन मंदिर का कार्य पूर्ण होते ही मूर्ति प्रतिष्ठा तथा तीन दिन की भागवत कथा, श्रीहरियाग ता. १-६-१० से ता. ३-६-१० तक धूमधाम से संपन्न किया गया था। शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने दशम स्कन्धकी सुंदर कथा का सभी को रसपान करवाया था।

ता. ३-६-१० को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से नूतन मंदिर की प्रतिष्ठा हुई थी। बाद में अन्नकूट की आरती उतारक पूर्णाहुति करके सभा मंडप में पधारे थे। बाद में यजमान परिवार श्रीदासजीभाई जे. काचा परिवार, मोहनभाई, श्री चंदूभाई, किशोर मनजी, भरतभाई डी, लवजी करशन खेवाडिया, रतुभाई, जयंतीभाई, चेतनकुमार विरेशभाई, राजेशभाई प्रवीणभाई, खीमजीभाई, सां.यो. राजकुंवरबा, सां.यो. उषाबा, गाँव के दरबार हरिभक्त प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किये थे। अंत में समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

इस प्रसंग पर अमदावाद से देव स्वामी (नारायणघाट), जे. के. स्वामी, मूली के महंत स्वामी, बालू स्वामी, प्रभु स्वामी, मोरबी, ध्रांगध्रा के संत। भात से पुरुषोत्तम स्वामी पधारे थे। समग्र प्रसंग में जे. के. स्वामी तथा को. रणछोभाई की सेवा सराहनीय थी। - कोठारी खेवडिया

विदेश सत्संग समाचार

न्युजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक मास में गवैया स्वामी चन्द्रप्रकाशदासजीने संगीत में धीरजाख्यान की कथा की थी। इस शुभ प्रसंग पर प.पू. बिन्दूराजा, श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार पधारे थे। समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था। जिस में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा श्री पंकजभाई की सेवा प्रेरणा रुप थी।

ता. १-६-१० शनिवार को सायं ५ से ७ बजे तक भजन संध्या का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर श्री प्रहलादभाई पटेल, श्री भक्तिभाई पटेल तथा युवक मंडल सेवा में सक्रिय थे। प्रति शनिवार को रात्रि ८-३० से १०-०० बजे तक युवक मंडल द्वारा वचनामृत (२७३) की कथा की जाती है। स्वा. चन्द्रप्रकाशदासजी सरलभाषा में सुन्दर कथा करके सभी को आनंदित करते हैं।

आज २३ वाँ पाटोत्सव ५ जून शनिवार को धूमधाम से मनाया गया। चन्द्रप्राश स्वामीने ठाकुरजी का अभिषेक सौम्यकुमार तथा सुव्रतकुमार के साथ किया था। इस प्रसंग पर कलशयात्रा, महापूजा, अन्नकूट दर्शन, संतो द्वारा कथा का भी आयोजन किया गया था। बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये बिन्दुराजा पधारी थी। ईश्वरभाई शुक्लजीने पूजा विधिकरवाई थी।

इस प्रसंग पर चेरीहील से शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, कोलोनिया से हरिनंददासजी, विहोकन मंदिर से चन्द्रप्रकाश स्वामी श्रीहरि की महिमा को समझाये थे। बालकों द्वारा नाटक खेला गया था। श्रीसुव्रतकुमार नीलकंठ वर्णी का वेषधारण किये थे। नाटक में भाग लेने वाले बालकों को बिन्दुराजा ने प्रोत्साहन पुरस्कार दिया था। श्रीहरि नाम स्मरण के साथ कथा पूर्ण हुई थी। - प्रवीणभाई पटेल तथा मेहुल ठक्कर

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में वैशाख शुक्ल-३ को परशुराम जयंती धूमधाम से मनाई गयी थी। इस प्रसंग पर स्वा. धर्मवल्लभदासजी तथा शा.स्वा. हरिनंदनदासजीने सुंदर कथा की थी। अक्षय ३ के दिन परशुराम भगवान का जन्म हुआ है,

इस विषय को लेकर विस्तारपूर्वक कथा की गयी थी । हरिभक्त कथा सुनकर तथा दर्शन का लाभ लेकर कृतकृत्य हो गये।

- प्रवीणभाई

वोशिंग्टन डी.सी. ैप्टर

यहाँ के बुवी मेरीलेन्ड में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से ११ जून शनिवार को सायं ७-१५ से १०-१५ तक ता. १९ जून शनिवार तक ४-४५ से ९-४५ तक सत्संग का आयोजन किया गया था । जिसमें श्री स्वामिनारायण भगवान की लीलाओं का वर्णन किया गया था । अपने एल.ए. मंदिर से स्वा. धर्मकिशोरदासजीने सेलफोन द्वारा श्रीहरि की तथा धर्मकुल की सर्वोपरिता का वर्णन किया था । इसके साथ महेसाणा में काशीबा के घर का चमत्कार तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के चमत्कार पर भी प्रकाश डाला था।

- कनुभाई पटेल

आई.एस.एस.ओ. "सेवा" द्वारा हेती तथा चीली के भूकंपग्रस्तो के लिए राहत सेवा कार्य

१२ जनवरी २०१० मंगलवार को हेती के पाटनगर पोर्ट-ओप्रिन्स से १६ माइल दूर लीओगेन शहर के नजदीक उसका केन्द्र था । ७.० रीकटर स्केल की तीव्रतावाला भयानक भूकंप हैती में आया था । उसके बाद २४ जनवरी तक ४.५ रीकटर स्केल से अधिक छोटे बड़े आफ्टर शोक का इस प्रदेश के लोगो को अनुभव हुआ था । हेती के सरकारी सूत्रों की जानकारी के अनुसार कुल २,३०,००० लोको इस भूकंप में मरे थे । ३,००,००० लोगो को छोटी-बड़ी चोट लगी थी । १०,००,००० लोग बेघर हो गये।

उसके बाद एक महीने के बाद २७ फेब्रुआरी २०१० के दिन चीली के मौले प्रदेश में ८.८. रीक्टर स्केल की तीव्रता का भूकंप लगभग ९० सेकन्ड तक चला था । इस भूकंप के कारण चीली के दरिया किनारे पर सुनामी का तूफान आया था । जिस भूकंपने बंदर को तबाह कर दिया था । इस भूकंप से चीली के लोगों पर असर हुई थी । देश के सभी शहेरो में दो सप्ताह तक अंधेरा छा गया था।

इन दोनो भयंकर कुदरती आफतो में मदद करने हेतु विश्व के कई देश आगे आये थे । विविधप्रकार की सहायता की थी जैसे राहत फंड, डॉक्टर तथा दवाई की मेडिकल टीम, एन्जीनीयरों की टीम एन्जीनीयरो की टीप आदि की व्यवस्था की थी । ऐसे समय में हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आई.एस.एस.ओ. "सेवा" ने मर्ची कोर्स के साथ मिलकर स्थानिक लोगो के लिए राहत-कार्य तथा बचाव कार्य शुरु किये थे । आई.एस.एस.ओ. मंदिर मे फंड एकत्र करने में हरिभक्तों में डॉ. मायाबहन रघुवंशी तथा श्री रघुवंशी ने पहल की थी । फंड की शुरुआत इस प्रकार से हुई । चीली के भूकंप पीडीत लोगों को मदद पहुँचाने के लिए आई.एस.एस.ओ. के मीशीगन, केलिफोर्नीया, मेसेच्युसेटस, इलोनिईच, केससा, न्युजर्सी के चेप्टरो द्वारा बहुत ही बड़ी राहत-फंड एकत्रित किया गया था । जो मर्सीकोर्स को तथा हेबीटेट फोर ह्युमिनीटी को बराबर हिस्सो में दिया गया था।

हेवीटेट पोर युमेनिटी को आई.एस.एस.ओ. सेवा द्वारा दिये गये फंड से लोगो के लिए पोषणयुक्त आहार बच्चो की देखभाल, तथा दवाई एवं असरग्रस्त लोगों की अन्य जरुरतो को पूर्ण करने के लिए उपयोग में लिया जाएगा।

इस प्रकार आई.एस.एस.ओ. सेवा द्वारा समग्र विश्व में कुदरती आपत्ति के समय में जरुरत के अनुसार तमाम राहत तथा मदद पहुँचाई गयी थी । हरिभक्तों से अनुरोधहै कि अपनी यथाशक्ति दान के लिए संस्था की बेवसाईट **www.issoseva.org** पर प्राप्त करे।

संस्था ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के मार्गदर्शन तथा सूचना अनुसार हैली में आए हुए भयंकर भूकंप में भूकंप पीडीतो को फंड देकर मदद पहुँचाई थी । जिसके लिए वहाँ की सरकारी संस्थाने आभार व्यक्त करते हुये पत्र अंग्रेजी में लिखा था उसका साराशं इस प्रकार से है।

हैती भूकंप की कुदरती आपत्ति के समय में आई.एस.एस.ओ. सेवा की अद्‌भुत सेवा के लिए मर्सीकोर्स की तरफ से हम सभी आपकी संस्था के बहुत आभारी है।

१२ वी जनवरी की इस दुःखद घटना में समग्र विश्व समुदायने ऐसी अनाचक आ पड़ी आपत्ति में दुनिया के सभी देशों की तरह सद्‌भाग्य से अपनी आई.एस.एस.ओ. सेवा संस्था द्वारा हमें मिले फंड-सरकार से अनुशासन (वहीवट)

के कारण हैती के पीडीत लोगो को पुनः स्थापन के लिए जरुरी मदद कर रहे हैं। तथा इस विषय में एक दीर्घ समय की योजना के लिए सोच रहे हैं।

आपके सहकार से हम पोर्टओ-प्रिन्स के केम्प में स्वच्छ पानी तथा शौचालय जैसी मुख्य सुविधाओं की पूर्ति करने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं।

इस के अलावा इस भूकंप दुर्घटना में से उभरे हुए युवानो को मानसिक सामाजिक मदद करने हेतु तथा हैती के उच्च प्रदेश स्थित कुटुंबो के लिए जरुरी पैसों की मदद के अभियान से तात्कालिक स्थानिक आर्थिक तंत्र को तैयार कर रहे हैं।

आज हमारी संस्था पर इस हैती के राहत फंड में जो विश्वास तथा श्रद्धा आपने दिखाई है उसके लिए हम आपके आभारी है। आपकी सहायता के बिना शायद यह सब कुछ शक्य नहीं हो पाता।

आपका विश्वासु,
के. बी. बार्कर, विकास अधिकारी,
मर्सीकोष रोजर सिर्सर हाउस,
केम्ब्रीज, एम.से ०२१३८

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

वाघोडीया (जि. वडोदरा) : संप्रदाय के दोनो देश अहमदाबाद तथा वडताल के पू. आचार्यश्री तथा ब्रह्मनिष्ठ संत तथा हरिभक्तों का प्रेमसंपादन करने वाले तथा (मूली-चरादवा वाले) पू. शा.स्वा. गोपालचरणदासजी के योग में आये हुये करीब पांच दशक से सत्संग में सक्रिय रहकर तन, मन तथा धन से सभी मंदिरो में बहुत ही सेवा करते थे। तथा देश विदेश में अमेरिका, आफ्रिका, स्वीडन, इंगलेन्ड आदि देशो में घूमकर हरिभक्तों को सर्वोपरि महाराज का अद्‌भुत निश्चय करवाते थे तथा दोनो आचार्य महाराजश्री के अत्यंत कृपापात्र ऐसे प.भ. धीरुभाई हरजीवनदास सोनी (वाघोडीया: ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-१ को ता. २७-६-२०१० के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

बावला (उनावा) : प.भ. जेशंगभाई रामाभाई चौधरी ता. ८-७-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

माणसा : प.भ. पुरीबहन विठ्ठलदास हरगोवनदास पटेल ता. १४-६-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

माधवगढ (ता. प्रांतिज) : प.भ. ललीबहन रणचोडभाई पटेल ता. २३-६-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अहमदाबाद-साबरमती : प.भ. कांताबहन कांडालाल मोदी ता. २४-५-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

नांदोल : प.भ. रावजीभाई मंगलदास पटेल ता. १०-६-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

अहमदाबाद (सोजावाला): प.भ. जगदीशकुमार परसोतमदास पटेल के चि. सुपुत्र उत्सवकुमार बहुत ही छोटी उम्र में श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए ता. १८-७-२०१ के दिन अक्षरनिवासी हुए हैं।

अंबापुर : प.भ. धरमशीभाई मनजीभाई टांक ता. १४-७-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

गत अंक जुलाई-२०१० का सुधार नोट

महेसाणा : के श्री नरनारायणदेव के परम आश्रित प.भ. नटुभाई मोदी के चि. सुपुत्र जिकेशभाई ता. २१-६-२०१० के दिन बहुत ही छोटी उम्र में श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।(ह. जयेशभाई मोदी)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।









(१) वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री तथा पू. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी तथा सभा में श्री सोमाभाई मोदी को आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री

(२) प्रांतीज मंदिर में पाटोत्सव की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री तथा सभा में प.पू. महाराजश्री के आश्रय में उद्‌बोधन करते हुए शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी तथा सभा में विराजमान पू. पी.पी. स्वामी के साथ संत मंडल

(३) खावड गाँव में नूतन स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री

(४) छपैया गाँव में गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री की प्रतिमा का पूजन करते हुए हरिभक्तगण

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



(१) सीडनी श्री स्वामिनारायण मंदिर में समूह महापूजा का लाभ लेते हुए हरिभक्तगण

(२) एटलान्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर के तीसरे पाटोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग लगाकर समूह महापूजा विधिकरवाते हुए पू. श्रीजीप्रकाशदासजी स्वामी तथा पू. जे.पी. स्वामी

(३) सीनेमेन्शन श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरुपूर्णिमा के प्रसंग पर कीर्तन संध्या कार्यक्रम में कीर्तन भक्ति करते हुए गवैया चंद्रप्रकाश स्वामी, शा. वी.पी. स्वामी तथा हरिभक्तगण

Museum Year
March 2010 - March 2011

इ.स. २०१०-११ का वर्ष "म्युजियम वर्ष"

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मार्च २०११ वर्ष "म्युजियम वर्ष" के रुप में प्रकाशित किया जाता है।

उद्घाटन ८मी मार्च २०११

संवत २०६७ फागुनसुद तीज श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव

www.swaminarayanmuseum.com/org

Praful Kharsani